दैनिक
साधना एक्सप्रेस

वर्ष-4 | अंक -252 | sadhnaexpress@gmail.com | भोपाल, रविवार, 6 सितंबर, 2026 | पृष्ठ-8 | मूल्य - 2 रुपये | www.sadhnaexpress.com

: ब्रीफ बॉक्स :

स्वतंत्र भारद्वाज को हिरासत में लिए जाने का विरोध

संसद मार्ग थाने के बाहर हिंदू संगठनों का प्रदर्शन सीजेपी के धरने के बाद पुलिस ने पकड़ा था

नई दिल्ली,एजेंसी। कॉकरोच जनता पार्टी कार्यकर्ता रीशू आजाद के पिता संजय से मारपीट के आरोपी स्वतंत्र भारद्वाज के समर्थन में दिल्ली में हिंदू संगठन ने प्रदर्शन किया।

प्रदर्शनकारी स्वतंत्र भारद्वाज को पुलिस हिरासत में लिए जाने का विरोध कर रहे हैं। यह प्रदर्शन दक्ष चौधरी ने बुलाया है। दक्ष हाई प्रोफाइल लोगों से मारपीट करने और थप्पड़ लगाने के लिए जाना जाता है। उसने कन्हैया कुमार को भी थप्पड़ मारा था।दक्ष ने बातचीत में कहा कि हमारी मांग यह है कि स्वतंत्र के ऊपर जो धाराएं लगी हैं। जैसे- SC/ST एक्ट, 307 और पॉक्सो एक्ट। यह दबाव में किया गया है।हालांकि स्वतंत्र के वकील ने थाने के अंदर अधिकारियों से मुलाकात की।

केरलम में महिला कांग्रेस विधायक के साथ हाथापाई

कार्यकर्ताओं ने हाथ मरोड़ा, धक्का-मुक्की की, 7 लोगों पर एफआईआर

तिरुवनंतपुरम,एजेंसी। केरल के तिरुवनंतपुरम जिले के चिरयिनकीझु में शुक्रवार रात कांग्रेस विधायक राम्या हरिदास और स्थानीय पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हो गई। झड़प का वीडियो भी सामने आया है। इसमें राम्या के साथ कुछ लोग हाथापाई करते दिख रहे हैं।

लोगों ने विधायक का हाथ पीछे की ओर मरोड़ दिया। वीडियो में विधायक अपना हाथ छोड़ने के लिए कहती हैं और सामने मौजूद व्यक्ति से पूछती हैं कि वह कौन है। घटना के बाद विधायक को चिरयिनकीझु तालुक अस्पताल में इलाज कराया।

पुलिस ने उनकी शिकायत पर जिला पंचायत सदस्य सजित मुथंबलम और पार्टी नेता साजद समेत 7 कांग्रेस कार्यकर्ताओं के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और एससी-एसटी एक्ट की धाराओं में केस दर्ज किया है।

जस्टिस भुइयां बोले : प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की कार्रवाई बेहद दुखद

पुलिस का रवैया बदलना जरूरी; कस्टडी में मौत और फर्जी एनकाउंटर गंभीर अपराध

नई दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस उज्जल भुइयां ने छात्र प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई पर चिंता जताई। उन्होंने कहा, 'जब IPS अधिकारी खुद प्रदर्शनकारियों पर हमला करते दिखाई देते हैं, तो यह बेहद दुखद है।'उन्होंने यह बात रिटायर आईपीएस अधिकारी यशोवर्धन आजाद की पुस्तक 'पुलिसिंग द रिपब्लिक' के विमोचन कार्यक्रम में कही। जस्टिस भुइयां ने कहा, 'पुलिस से जिस निष्पक्षता की उम्मीद की जाती है, वह कहीं गायब होती दिख रही है। पुलिस को अपना रवैया बदला होगा। हिरासत में मौत और फर्जी एनकाउंटर गंभीर अपराध हैं।'

जस्टिस भुइयां के इस बयान को पिछले दिनों हुए कॉकरोच जनता पार्टी के प्रदर्शन से जोड़कर देखा जा रहा है। यहां संसद मार्च के दौरान पुलिस के साथ झड़प में कई प्रदर्शनकारी जख्मी हुए थे। पैलेट गन चलाने का आरोप भी लगा है।. पुलिस अमीनवीय व्यवहार नहीं कर सकतीः सभ्य समाज में हिरासत में मौत बेहद गंभीर अपराध है। किसी भी स्थिति में पुलिस किसी व्यक्ति के साथ यातना या अमानवीय व्यवहार नहीं कर सकती।

- महाराष्ट्र के वैभव ने वीडियो बनाकर मैथ्स आसान की
- राजस्थान के दिव्येंदु ने पेड़ों पर क्यूआर कोड लगाकर पढ़ाया

देश के 48 टीचर्स को नेशनल अवॉर्ड

नई दिल्ली,एजेंसी। शिक्षक दिवस के मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शनिवार को दिल्ली के विज्ञान भवन में देशभर के 48 स्कूल शिक्षकों को नेशनल टीचर अवॉर्ड 2026 से सम्मानित किया। इनमें केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, सैनिक स्कूल, आदर्श जनजातीय स्कूल और पीएम श्री स्कूलों के शिक्षक शामिल हैं।

इन शिक्षकों ने पढ़ाई को आसान और दिलचस्प बनाने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाए। महाराष्ट्र के वैभव वसंतराव कुलकर्णी ने गणित के मुश्किल टॉपिक समझाने के लिए 700 से ज्यादा वीडियो बनाए, जबकि राजस्थान के दिव्येंदु सेन ने 500 पेड़ों पर क्यूआर कोड लगाकर बच्चों को पेड़ों के बारे में जानकारी दी।

इसके अलावा पंजाब के दिनेश कुमार ने वर्चुअल फिजिक्स लैब और 100 से ज्यादा कम खर्च वाले मॉडल तैयार किए। चंडीगढ़ के रवि जयसवाल ने 3D गुंबद थिएटर और मौसम केंद्र बनाया, वहीं हिमाचल की मंजरी महाजन ने स्कूल को प्लास्टिक-फ्री बनाने और कचरा प्रबंधन पर काम किया।

देशभर में 3 चरणों में हुआ टीचर्स का चयन: शिक्षा मंत्रालय के मुताबिक, नेशनल अवॉर्ड के लिए 27 राज्यों, 7 केंद्र शासित प्रदेशों से 48 टीचर्स चुने गए हैं। इनका चयन स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने तीन चरणों में किया। यह प्रक्रिया जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पूरी हुई।

नेशनल अवॉर्ड का मकसद शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर काम करने वाले टीचर्स को सम्मानित करना है। इसमें ऐसे टीचर्स को चुना जाता है, जिन्होंने पढ़ाई के नए तरीके अपनाकर छात्रों के सीखने और विकास में योगदान दिया हो।

मोदी ने पूछा- पब्लिक से कैसे बात करें, टिप्स दें

महिला टीचर का जवाब- कॉन्फिडेंस चाहिए ; पीएम की राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाले शिक्षकों से मुलाकात

नई दिल्ली,एजेंसी। पीएम मोदी ने नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों से शुक्रवार को मुलाकात की। उन्होंने इस बातचीत का एक वीडियो भी जारी किया। और एक्स अकाउंट पर लिखा कि शिक्षक दिवस शिक्षकों के समाज में महत्वपूर्ण योगदान को सम्मान देने का अवसर है। यह दिन भारत के महान शिक्षाविद और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि देने के लिए भी मनाया जाता है। आइए, जानते हैं पीएम मोदी ने शिक्षकों से किन-किन मुद्दों पर बात की। इस दौरान उन्होंने एक शिक्षिका से अपने सार्वजनिक भाषण कौशल को बेहतर बनाने का सुझाव मांगा। पीएम मोदी ने कहा कि अगर मैं आपका विद्यार्थी होता और एक कुशल वक्ता बनना चाहता, तो आप मुझे क्या सुझाव देतीं? मुझे क्या करना चाहिए? इस सवाल के जवाब में अध्यापिका ने कहा कि आपको पहले कॉन्फिडेंस होना है। इसके बाद वहां मौजूद सभी शिक्षिक हंसने लगे। इस खुशनुमा माहौल में पीएम मोदी भी हंसने लगे। इसके बाद शिक्षिका ने कहा हंसते हुए कहा कि सर, आपका औरा इतना देखकर मुझे ही डाउट हो गया।

शिक्षिका ने अच्छा वक्ता बनने के लिए क्या मंत्र दिया?

इसके बाद शिक्षिका ने कहा कि अच्छी बोलने की क्षमता केवल जन्मजात गुण नहीं है, बल्कि इसे अभ्यास से बेहतर किया जा सकता है। उन्होंने आत्मविश्वास को सबसे पहली जरूरत बताया और कहा कि लगातार अभ्यास करने से आत्मविश्वास आता है।

केरलम में लॉरी से टकराई कार, 8 की मौत

त्रिशूर,एजेंसी। केरलम के त्रिशूर जिले में शुक्रवार देर रात एक कार हाईवे पर खड़ी लॉरी से टकरा गई। हादसे में कार सवार 8 इंजीनियरिंग छात्रों की मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक, हादसा रात करीब 11:40 बजे कैपामंगलम के पनंबिकुन्नू में हुआ।

पुलिस ने बताया कि सभी मृतक तमिलनाडु के डिंडीगुल के एक इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र थे। कार गुरुवायुर से कोडुंगल्लूर जा रही थी। इसी दौरान वह महाराष्ट्र नंबर की लॉरी के पीछे जा घुसी। हादसे में 6 छात्रों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 2 को अस्पताल पहुंचने पर मृत घोषित किया गया।टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। उसमें फंसे छात्रों को निकालने के लिए गाड़ी को काटना पड़ा। स्थानीय लोगों, पुलिस और दमकल-बचाव दल ने रेस्क्यू ऑपरेशन चलाकर शवों को बाहर निकाला। इसके बाद सभी शवों को त्रिशूर मेडिकल कॉलेज की मोर्चरी में भेज दिया गया।

डायवर्जन के पास खड़ी थी लॉरी

एफआईआर के मुताबिक, निर्माण कार्य के चलते हाईवे पर बैरिकेड लगाकर ट्रैफिक डायवर्ट किया गया था। इसके बावजूद लॉरी सड़क के दाईं ओर खड़ी थी। पुलिस के मुताबिक, कार तेज रफ्तार में थी और चालक डायवर्जन बैरिकेड को नहीं देख पाया।शुरुआती जांच में पुलिस ने हादसे के लिए लॉरी चालक की गलती बताई है। त्रिशूर ग्रामीण पुलिस प्रमुख मोहम्मद नदीमुद्दीन ने कहा कि हाईवे पर इस जगह लॉरी खड़ी करना गलत था। हाईवे अधिकारियों और निर्माण कंपनी ने पर्याप्त संकेतक और चेतावनी बोर्ड लगाए थे या नहीं, इसकी भी जांच की जाएगी।

राजस्थान, एमपी-यूपी में बारिश नदियां उफान पर, स्कूल बंद

बिहार में बाढ़, 6.65 लाख लोग प्रभावित; केदारनाथ में चारधाम यात्रा रुकी

नई दिल्ली,एजेंसी। राजस्थान, मध्यप्रदेश और यूपी में लगातार बारिश हो रही है। म.प्र. के 19 जिलों में आज भारी बारिश का अलर्ट है। शिवपुरी-मुरैना समेत 7 जिलों में स्कूल बंद हैं।

राजस्थान के धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर में शनिवार को भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। जयपुर में रातभर हुई बारिश के कारण तापमान में 7 डिग्री तक की गिरावट आई है। झालावाड़ में स्कूल बंद कर दिए गए हैं।

वहीं उत्तर प्रदेश में मानसून एक बार फिर एक्टिव है। प्रदेश के 22 जिलों में बारिश का यलो अलर्ट जारी किया गया है। अगले पांच दिनों तक राज्य के कई हिस्सों में बारिश का दौर जारी रहने की संभावना है।

गंगा-यमुना समेत 10 से अधिक नदियों के उफान पर होने से प्रदेश के 26 जिलों में बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं। करीब 3.53 लाख लोग प्रभावित हैं, जबकि 17,544 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा चुका है।वहीं बिहार में भी 16 जिलों में बाढ़ से करीब 5 लाख लोग प्रभावित हैं। गंगा समेत 8 प्रमुख नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। आपदा विभाग के मुताबिक, पटना में गंगा का जलस्तर अब तक के हाइएस्ट फ्लड लेवल को पार कर सकता है।

उत्तराखंड के केदारनाथ में भारी बारिश हो रही है, जिसके चलते यात्रियों को सुरक्षित स्थानों पर रोका गया है।

महाराष्ट्र में नवरात्रि पर गरबा में मुस्लिम बैन

आधार कार्ड जांच और तिलक से पहचान के बाद एंट्री ; विहिप नियम जारी किए

मुंबई,एजेंसी। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने महाराष्ट्र में नवरात्रि के दौरान गरबा-डांडिया में मुस्लिमों को शामिल नहीं होने देने का फैसला किया है। विहिप ने आयोजकों के लिए नियम तय किए हैं।

इनमें आने वालों के आधार कार्ड की जांच और हिंदू पहचान की पुष्टि के लिए माथे पर तिलक लगाने को कहा गया है।राज्य में नवरात्रि में एक लाख से ज्यादा जगहों पर गरबा होता है। विहिप ने कहा- लव जिहाद रोकने के लिए नियम बनाए गए हैं।

विहिप बोली- नवरात्रि देवी की आराधना का पर्व: विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता और संयुक्त सचिव श्रीराज नायर ने कहा- नवरात्रि सिर्फ नाच-गाने का आयोजन नहीं, बल्कि देवी की आराधना का पर्व है।

पाबंदियों का मकसद किसी समुदाय का विरोध नहीं है। विहिप इन्हें एहतियाती कदम मानता है।उन्होंने कहा कि नियमों का पालन कराने के लिए गरबा मंडपों में विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के निगरानी दस्ते तैनात रहेंगे।

सार्वजनिक मंडल 25-30 हजार, 40 हजार तक भीड़: महाराष्ट्र में 25 से 30 हजार सार्वजनिक गरबा मंडल हैं। मुंबई महानगर में 3 हजार से ज्यादा हैं। मुंबई, ठाणे और नवी मुंबई में 50 से 70 बड़े मैदानों पर व्यावसायिक आयोजन होते हैं।

तमिलनाडु में फोन बैन होने से युवा मंदिरों से दूर

श्रद्धालु 20% तक घटे; 52 मंदिरों में 1 सितंबर से मोबाइल पर रोक

चेन्नई,एजेंसी। तमिलनाडु के कांचीपुरम स्थित देवराजस्वामी अथि वरदराज मंदिर में मोबाइल बैन के बाद नजारा बदल गया है। ध्वजस्तंभ के पास, जहां पहले युवा सेल्फी लेते दिखते थे, अब ज्यादातर बुजुर्ग श्रद्धालु नजर आ रहे हैं।

मोबाइल जमा करने वाले काउंटर पर पहले दिन लंबी लाइन थी, लेकिन अब वहां भी मिडिल एज और बुजुर्गों की संख्या ज्यादा है। इससे संकेत मिल रहा है कि कई युवा मंदिर आना कम कर रहे हैं। यह स्थिति सिर्फ वरदराज मंदिर की नहीं है।

राज्य के कई बड़े मंदिरों में भी ऐसा ही असर दिख रहा है। मंदिर प्रशासन के मुताबिक नियम लागू होने के बाद रोजाना संख्या 20% तक कम हुआ है। कमी सबसे ज्यादा युवाओं में दिख रही है, जो पहले दर्शन के साथ-साथ फोटो, वीडियो और सोशल मीडिया कंटेंट के लिए भी आते थे।

दरअसल, तमिलनाडु के 52 बड़े मंदिरों में 1 सितंबर से मोबाइल फोन पर बैन लागू किया गया है। मंदिर में प्रवेश से पहले स्मार्टफोन काउंटर पर जमा करना होगा। इसके लिए हर फोन पर 5 रुपए चार्ज देना होगा।

मंदिर प्रशासन बोला- मद्रास हाईकोर्ट ने बैन लगाया, हम सिर्फ लागू कर रहे :

देवराजस्वामी मंदिर के एग्जीक्यूटिव ऑफिसर आर. गणेशन ने फुटफॉल घटने की बात मानी, लेकिन फैसले का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि मंदिरों में भक्तों की कमी मुख्य रूप से युवाओं में है।हमें अफसोस है, लेकिन मंदिर की पवित्रता इस्टाग्राम के लिए कम नहीं की जा सकती। यह बैन मद्रास हाई कोर्ट के दिसंबर 2022 के आदेश के तहत है, हम सिर्फ उसे लागू कर रहे हैं।

सिंधु जल संधि के निलंबन के बीच भारत का बड़ा कदम

लद्दाख में बिना सीमेंट-कंक्रीट का बांध तैयार; 10 फीट तक बढ़ा जलस्तर

लेह,एजेंसी। सिंधु जल संधि के निलंबन के बीच भारत ने लद्दाख में पत्थरों का ऐसा बांध बना दिया है, जिससे लद्दाख के बंजर क्षेत्र को पानी मिलने के साथ पाकिस्तान की मुसीबत और बढ़ सकती है।पत्थरों का इस्तेमाल कर बनाए इस चेक डैम से सिंधु का जलस्तर 10 फीट ऊपर हो गया है और इससे चार करोड़ लीटर पानी लद्दाख के सूखे खेतों को मिल सकेगा।यहां बता दें की सिंधु जल समझौते के तहत सिंधु नदी का पूरा पानी पाकिस्तान चला जाता था और लद्दाख की जमीन सूखी ही रह जाती थी।पहलगाम हमले के बाद भारत ने सिंधु जल समझौते को निलंबित कर दिया था। इससे पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपना दुखड़ा रो रहा है। हाल ही में एससीओ सम्मेलन में भी पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने इस समझौते का मुद्दा उठाया था।

लेह के लिए बनाया पत्थरों का बांध: लेह जिले के उश्शी इलाके में बने इस चेक डैम से अब करीब चार करोड़ लीटर पानी का संग्रह संभव हो सकेगा। इस पानी को सिंचाई नहर के जरिए उन खेतों तक पहुंचाया जा रहा है, जो लंबे समय से पानी की कमी से जूझ रहे थे।

इस ढांचे में किसी तरह का कंक्रीट या सीमेंट का इस्तेमाल नहीं हुआ है। केवल प्राकृतिक पत्थरों से इस चेक डैम को बनाया गया है। लद्दाख के किसान इस डैम के पानी का इस्तेमाल कर सकेंगे।

अब तक सूखे रहते थे खेत : लद्दाख के किसानों की सबसे बड़ी विडंबना यह थी कि उनके पास दुनिया की प्रमुख नदियों में से एक सिंधु मौजूद थी, लेकिन उसका पानी खेतों तक पहुंचाना संभव नहीं था।

सिंधु नदी गहरी घाटियों के बीच काफी नीचे बहती है, ऐसे में बुआई के दौरान पंपों के जरिए नदी से पानी निकालना आसान नहीं था।

अब यह डैम बनने से जलस्तर करीब 10 फीट ऊंचा हो गया है और इससे पानी को खेतों तक पहुंचाना संभव हो पा रहा है। भले ही इससे बिजली उत्पादन संभव नहीं है, पर लद्दाख के किसानों के लिए यह योजना वरदान साबित हो सकती है।

अब 36 और परियोजनाओं की तैयारी : उश्शी के चेक डैम की तर्ज लद्दाख प्रशासन सिंधु नदी और दूसरे जल स्रोतों पर इसी तरह के ढांचे विकसित करने की दिशा में काम कर रहा है।लद्दाख प्रशासन ने केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय को 36 चेक डैम का प्रस्ताव भेजा है। इन परियोजनाओं की अनुमानित लागत 56 करोड़ रुपये से अधिक बताई गई है।

कृष्ण जन्मोत्सव में बिखरी भक्ति की छटा, विशेष बच्चों की प्रतिभा ने मोहा मन

विशेष बच्चों को अवसर और सम्मान देना समाज की जिम्मेदारी : पुष्पलता त्रिपाठी

» मूक-बधिर बच्चों की नृत्य प्रस्तुति एवं रैंप वॉक रहा आकर्षण का केंद्र

साधना एक्सप्रेस रायपुर।

कृष्ण जन्मोत्सव के पावन अवसर पर आयोजित भव्य समारोह में हरसंभव फाउंडेशन की पुष्पलता त्रिपाठी को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्हें कोपलवाणी स्पेशल चाइल्ड वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन एवं संतोष अग्रवाल अविनाश फाउंडेशन द्वारा विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कांता सिंघानिया, ट्रस्टी अविनाश फाउंडेशन तथा विशेष अतिथि अनु चक्रवर्ती, भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष, महासमुंद सहित अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। सभी अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान हरित पौधे भेंट कर किया गया। इस पहल के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और हरियाली का संदेश दिया गया।

समारोह में मूक-बधिर बच्चों द्वारा विशेष नृत्य प्रस्तुति एवं रैंप वॉक प्रस्तुत किया गया। बच्चों ने पूरे आत्मविश्वास और उत्साह के साथ

अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जिसे देखकर उपस्थित अतिथियों एवं दर्शकों ने जमकर सराहना की। बच्चों की प्रस्तुति कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रही।

कार्यक्रम के दौरान भगवान श्रीकृष्ण के स्नान, ध्यान, पूजा-अर्चना एवं आरती में अतिथियों ने श्रद्धापूर्वक सहभागिता की। पूरा आयोजन भक्ति, उल्लास और सामाजिक संवेदना से ओत-प्रोत रहा।

इस अवसर पर हरसंभव फाउंडेशन की पुष्पलता त्रिपाठी ने कहा कि विशेष बच्चे प्रतिभा के मामले में किसी से कम नहीं हैं। उन्हें केवल उचित अवसर, प्रोत्साहन और सहयोग की आवश्यकता है। मूक-बधिर बच्चों द्वारा प्रस्तुत नृत्य एवं रैंप वॉक ने यह साबित कर दिया कि प्रतिभा किसी सीमा की मोहताज नहीं होती। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव हमें प्रेम, करुणा, सेवा और मानवता का संदेश देता है। ऐसे अवसरों पर विशेष बच्चों को साथ लेकर उन्हें सम्मान और मंच प्रदान करना इस पर्व की सार्थकता को और बढ़ाता है।

पुष्पलता त्रिपाठी ने कहा कि समाज के प्रत्येक वर्ग को विशेष बच्चों की प्रतिभा को पहचानने और उन्हें आगे बढ़ने के अवसर देने के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कोपलवाणी स्पेशल चाइल्ड वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन एवं संतोष अग्रवाल अविनाश फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन समाज में समानता, समावेशिता और संवेदनशीलता की भावना को मजबूत करते हैं। उन्होंने सभी बच्चों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हर बच्चे में एक विशेष प्रतिभा होती है, जरूरत है तो बस उसे पहचानने और निखारने की। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों, आयोजकों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया गया। कृष्ण जन्मोत्सव का यह समारोह भक्ति, सेवा, सम्मान और विशेष बच्चों की प्रतिभा के सुंदर संगम के रूप में यादगार रहा।

पीएमश्री कन्या नवीन स्कूल में मनाया गया शिक्षक दिवस, छात्राओं ने किया शिक्षकों का सम्मान

साधना एक्सप्रेस गाडरवारा

(राजेश नीरस) शनिवार को स्थानीय पीएमश्री शासकीय कन्या नवीन उ मा विद्यालय में शिक्षक दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ शिक्षकों द्वारा माँ सरस्वती एवं देश के पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन के चित्र का पूजन कर किया गया। इस कार्यक्रम मे छात्राओं ने शिक्षकों का सम्मान करते हुए उन्हें उपहार भेंट किये। इस अवसर पर प्राचार्य सतीश नाईक ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए

कहा कि सभी छात्राएँ बेहतर पढ़ाई कर उत्कृष्ट परिणाम का तोहफा गुरुओं को दें। कार्यक्रम में विद्यालय स्टॉफ के सदस्य सहित स्कूल की छात्राएँ उपस्थित रही

बहनों का स्नेह और आशीर्वाद सदैव बना रहे - मंत्री उदय प्रताप सिंह

साधना एक्सप्रेस गाडरवारा

(राजेश नीरस) लक्ष्मी टाउनशिप स्थित सेवासदन में मध्यप्रदेश शासन के स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री उदय प्रताप सिंह ने जनप्रतिनिधियों, पार्टी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं विधानसभा सहित अन्य क्षेत्रों से पधारे गणमान्य नागरिकों से सौजन्य भेंट की।

इस दौरान मंत्री श्री सिंह ने आमजनों की समस्याएं सुनी और उनके त्वरित निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित भी किया। सेवासदन में क्षेत्र भर से नागरिकों के मिलने का क्रम लगा रहा।

इस अवसर पर उपस्थित बहनों ने मंत्री श्री सिंह को रक्षासूत्र बांधा। बहनों से राखी बंधवाते हुए मंत्री जी भावुक नजर आए। उन्होंने कहा कि बहनों का यह स्नेह और आशीर्वाद सदैव बना रहे। मेरी हर

बहन के जीवन में सुख, समृद्धि और खुशहाली का वास हो, ऐसी कामना करता हूं। यह रक्षासूत्र मेरे लिए केवल एक धागा नहीं, बल्कि क्षेत्र की सेवा करने के दायित्व का बोध है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, कार्यकर्ता एवं आमजन उपस्थित रहे।

21 फीट ऊंचाई पर होगा मटकी फोड़ का हो रहा रोमांच, विजेता को 21 हजार का इनाम

साधना एक्सप्रेस गाडरवारा

(राजेश नीरस) श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर नगर में उत्साह और उमंग का माहौल है। इस बार जन्माष्टमी पर्व को खेल भावना, संस्कृति और एकता के संगम के रूप में मनाया जा रहा है।

नगर की युवा शक्ति के लिए एक भव्य मटकी फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया जा गया है। यह प्रतियोगिता 21 फीट की ऊंचाई पर पुरानी गल्ला मंडी में आयोजित की गई है।

इस आयोजन में लूनावत ज्वेलर्स का विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। आयोजक कमल खटीक मित्र मंडल द्वारा इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। मंडल के सदस्यों ने बताया कि मटकी फोड़ने में सफल होने वाले प्रतिभागी या टोली को 21 हजार रुपये की आकर्षक इनामी राशि प्रदान की जाएगी। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए एंट्री फीस 251 रुपये रखी गई है। मटकी फोड़ प्रतियोगिता को लेकर

नगर के युवाओं में भारी उत्साह देखा जा रहा है। युवा टोलियां इस रोमांचक मटकी फोड़ प्रतियोगिता में पहुंच की आनंद की अनुभूति प्राप्त कर रहे हैं मटकी फोड़ प्रतियोगिता स्थल पर दर्शकों की भारी भीड़ देखी जा रही है । आयोजन स्थल पर सुरक्षा और व्यवस्था के भी पुख्ता इंतजाम किए जा रहे हैं।

आयोजकों ने नगर के सभी युवाओं से इस उत्सव में बढ़-चढ़कर भाग लेने की अपील की है।

शिक्षक दिवस पर एन टी पी सी गाडरवारा ने शिक्षकों को किया सम्मानित

साधना एक्सप्रेस गाडरवारा

(राजेश नीरस) भारत के महान शिक्षाविद् एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की जयंती के अवसर पर शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में एनटीपीसी गाडरवारा द्वारा अपनी सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत एक विशेष शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कार्यकारी निदेशक एवं परियोजना प्रमुख हिम्मत सिंह चौहान थे। इस अवसर पर मानव संसाधन प्रमुख भास्कर गुप्ता तथा खंड शिक्षा अधिकारी, वीरेंद्र सिंह राजपूत भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।इस

अवसर पर एनटीपीसी गाडरवारा के परियोजना प्रभावित ग्रामों (PAVs) एवं आसपास के गांवों के शिक्षकों को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से समाज के निर्माण एवं बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षकों द्वारा किए जा रहे अमूल्य योगदान के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त किया गया।

इस विशेष पहल से सभी शिक्षक अत्यंत प्रसन्न एवं उत्साहित दिखाई दिए। शिक्षकों ने एनटीपीसी गाडरवारा द्वारा शिक्षा एवं सामाजिक विकास के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए इस पहल के लिए एनटीपीसी गाडरवारा के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

एनटीपीसी गाडरवारा सदैव अपने परियोजना प्रभावित एवं आसपास के क्षेत्रों के समग्र विकास तथा शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रतिबद्ध है।

उमंग, उल्लास और आध्यात्मिकता के साथ मनाई गई जन्माष्टमी

साधना एक्सप्रेस गाडरवारा

(राजेश नीरस) प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, लक्ष्मी टाउनशिप, गाडरवारा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व बड़े ही उमंग, उत्साह एवं आध्यात्मिक भाव के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा भगवान श्री राधे-कृष्ण के विभिन्न मनमोहक स्वरूपों की सुंदर झांकियां सजाई गईं, जिन्होंने उपस्थित जनसमुदाय का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने श्रीकृष्ण के जीवन एवं चरित्र पर आधारित मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। उनकी भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने पूरे वातावरण को कृष्णमय बना दिया और उपस्थित सभी श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज गाडरवारा की प्रभारी ब्रह्माकुमारी उर्मिला दीदी ने जन्माष्टमी के आध्यात्मिक रहस्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि श्रीकृष्ण केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि प्रेम, पवित्रता, सत्यता, समर्पण और दिव्य गुणों के प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार श्रीकृष्ण गोप-गोपिकाओं के बीच रहते हुए भी सदा अनासक्त और पवित्र रहे, उसी प्रकार हमें भी संसार में रहते हुए अपने जीवन को पवित्र, निर्मल और ईश्वरीय गुणों से संपन्न बनाना है।

उन्होंने सभी से आह्वान किया कि हम अपने जीवन में प्रेम, पवित्रता, त्याग और समर्पण जैसे दिव्य गुणों को धारण करें तथा आने वाले पावन, सुखमय एवं स्वर्णिम सतयुग की दुनिया का आह्वान करें।

कार्यक्रम में सभी ने मिलकर आनंद से परिपूर्ण सुंदर रास का आयोजन किया। इसके पश्चात आकर्षण का केंद्र रहे मटकी फोड़ कार्यक्रम में बच्चों के साथ-साथ बड़ों ने भी बढ़-चढ़कर उत्साहपूर्वक सहभागिता की। मटकी फोड़ने में श्रीमती वंदना कौरव ने सफलता प्राप्त की। इस अवसर पर उन्हें सम्मानस्वरूप श्रीकृष्ण की सुंदर तस्वीर भेंट की गई।

कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थितजनों को प्रेम एवं प्रसाद स्वरूप माखन-मिश्री एवं फलों का वितरण किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम उमंग, उल्लास, प्रेम और आध्यात्मिक आनंद से सराबोर रहा तथा सभी ने श्रीकृष्ण के दिव्य गुणों को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प लिया।

शिक्षक दिवस पर पाली प्राथमिक शाला के शिक्षकों का अनूठा सम्मान, ग्रामवासियों ने पैर धुलाकर किया पूजन

साधना एक्सप्रेस गाडरवारा

(राजेश नीरस) शिक्षक दिवस के अवसर पर साईखेड़ा ब्लॉक के ग्राम पाली (खेरी) की शासकीय प्राथमिक शाला में शिक्षकों के सम्मान में ग्रामवासियों द्वारा भावपूर्ण एवं अनूठी पहल की गई। ग्रामवासियों ने शिक्षकों के पैर धुलवाकर उनका पूजन किया तथा शाल और श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया।इस अवसर पर शाला के प्रधान पाठक सिराज अहमद सिद्दीकी ने कहा कि “अपनी कर्मभूमि में इससे बड़ा सम्मान मेरे लिए और कुछ हो ही नहीं सकता। ग्रामवासियों द्वारा दिया गया यह स्नेह और सम्मान मेरे लिए किसी बड़े पुरस्कार से कम नहीं है। इस सम्मान ने हम सभी शिक्षकों की जिम्मेदारी को विद्यालय के बच्चों के प्रति और भी बढ़ा दिया है।”उन्होंने कहा कि

शिक्षक और समाज का रिश्ता केवल विद्यालय तक सीमित नहीं होता, बल्कि बच्चों के भविष्य निर्माण में ग्राम, अभिभावक और शिक्षक की साझी भूमिका होती है। ग्रामवासियों के इस स्नेह ने शिक्षकों को बच्चों के लिए और अधिक समर्पण एवं निष्ठा से कार्य करने की प्रेरणा दी है।इस अवसर पर शाला प्रबंधन समिति अध्यक्ष शिवपाल धानक, जितेंद्र राजपूत, पोहप राजपूत, दादुवीर ठाकुर, महेंद्र मेहरा, अन्नी लाल ठाकुर, हरि ओम ठाकुर, सोवरन ठाकुर, राघवेंद्र ठाकुर, सर्जन धानक, सूरज धानक, कंछेदी ठाकुर सहित बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।ग्रामवासियों के इस आत्मीय सम्मान ने शिक्षक दिवस को पाली प्राथमिक शाला के लिए एक अविस्मरणीय और भावुक अवसर बना दिया।

रोटरी क्लब ने शिक्षक दिवस पर किया शिक्षकों का सम्मान

साधना एक्सप्रेस गाडरवारा

(राजेश नीरस) शनिवार को रोटरी क्लब ऑफ़ गाडरवारा द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी शिक्षक दिवस के अवसर पर सम्माननीय गुरुजनों का सम्मान स्थानीय शासकीय कन्या उ मा विद्यालय में किया। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त बीईओ प्रतापनारायण, मुमताज़ खान, सुशील शर्मा, यू एस सोनी सहित सम्पूर्ण कन्या शाला स्टॉफ के अलावा उपस्थित शिक्षकों का तिलक, आरती, पुष्प वर्षा के साथ शॉल, मिष्ठान्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों एवं रोटरी क्लब के सदस्यों द्वारा माँ सरस्वती एवं पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन के चित्र का पूजन कर किया गया। इस दौरान शिक्षक राजेश

गुप्ता एवं छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सहायक संचालक सुश्री सीमा डोंगरे ने कहा कि शिक्षक विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण का कार्य करते है। उनका हृदय हमेशा छात्र छात्राओं के प्रति कोमल होना चाहिए। सेवानिवृत्त प्राचार्य सुशील शर्मा ने कहा कि समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों की अहम भूमिका रहती है। रोटरी क्लब के अध्यक्ष शरद मौलासरिया ने कहा कि शिक्षकों का सम्मान करने पर गर्व की अनुभूति होती है। क्लब के डॉ उमाशंकर दुबे ने कहा कि रोटरी क्लब हमेशा से ही समाजसेवा में अग्रणी भूमिका निभाता है। कार्यक्रम का मंच संचालन रोटरी क्लब के शिक्षा समिति चेयरमैन अमित पटैल ने करते हुए आयोजन की रुपरेखा बताई। अंत में आभार प्रदर्शन कोषाध्यक्ष मनोज वशा ने किया। कार्यक्रम में बीआरसी संदीप स्थापक, संस्था प्राचार्य मालती मेहरा के अलावा रोटरी क्लब से पूर्व असिस्टेंट गवर्नर अशोक राजपूत, पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र साहू, राजेश गुप्ता, सचिव संजय गुप्ता, अरुण तिवारी राजीव जैन, सुनील श्रीवास्तव, अक्षय जैन,राजेश बरसैयाँ, मधुसूदन पटैल, साकेत बड़ारया, प्रतीक साहू, विजय नायक,निमित्तकांत जैन,अमित साहू, कंछेदी धानक एवं स्कूल के छात्र छात्राएँ उपस्थित रहे

सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या बढ़ी, शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह

साधना एक्सप्रेस गाडरवारा*। (राजेश नीरस) मध्यप्रदेश के स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री उदय प्रताप सिंह ने गाडरवारा प्रवास के दौरान स्कूल शिक्षा विभाग को लेकर कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में स्कूल शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश द्वारा शिक्षण सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु लगातार अभिनव प्रयास किए जा रहे हैं।

कैबिनेट मंत्री श्री सिंह ने कहा कि प्रदेश में बड़ी संख्या में स्कूल बंद होने की खबरें सामने आ रही हैं, मैं इससे सहमत नहीं हूं। इसके विपरीत मध्यप्रदेश में सरकारी स्कूलों में बच्चों की दर्ज संख्या में

लगातार वृद्धि हुई है। सरकार की मंशा हर बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंचाने की है। टी ई टी परीक्षा को लेकर मंत्री जी ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में सरकार शिक्षकों के हित में लगातार प्रयास कर रही है। सरकार ऑफलाइन टी ई टी परीक्षा कराने की तैयारी भी कर रही है, ताकि शिक्षकों को सुविधा हो और पारदर्शिता के साथ परीक्षा संपन्न हो सके। उन्होंने कहा कि स्कूल शिक्षा विभाग प्रदेश में शिक्षा के स्तर को और बेहतर बनाने के लिए अधोसंरचना विकास, शिक्षकों की भर्ती और नवीन तकनीकों के उपयोग पर जोर दे रहा है, जिससे बच्चों को बेहतर शिक्षण सुविधा मिल सके।

कुशाभाऊ ठाकरे जयंती पर सीएम मोहन यादव बोले

भाजपा फीनिक्स पक्षी जैसी, कितना भी नष्ट करो, कभी खत्म नहीं होगी

भोपाल । भाजपा के पितृपुरुष और वरिष्ठ नेता कुशाभाऊ ठाकरे की जयंती पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुक्रवार को भोपाल में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। ठाकरे कन्वेंशन सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कुशाभाऊ ठाकरे के संगठनात्मक कौशल और संघर्षपूर्ण राजनीतिक जीवन को याद करते हुए कहा कि भाजपा की ताकत उसके कार्यकताओं और मजबूत संगठन में है।

मुख्यमंत्री ने भाजपा की तुलना फीनिक्स पक्षी से करते हुए कहा कि पार्टी को कितना भी कमजोर करने या खत्म करने का प्रयास किया जाए, वह हर बार नई ताकत के साथ खड़ी होती है। उन्होंने कहा कि विपरीत परिस्थितियों में भी भाजपा लगातार मजबूत हुई है और आगे भी बढ़ती रहेगी।

मुख्यमंत्री ने कुशाभाऊ ठाकरे की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनके जीवन से संगठन और सरकार चलाने की सीख ली जा सकती है। सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों के बावजूद ठाकरे ने संगठन को मजबूत बनाने और कार्यकताओं को जोड? में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि कुशाभाऊ ठाकरे ने जीवनभर संघर्ष किया।

भाजपा को जितना कमजोर करेंगे, उतनी ताकत से लौटेगी

मुख्यमंत्री ने भाजपा की राजनीतिक यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा कि पार्टी ने लंबे समय तक कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। तमाम चुनौतियों और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भाजपा का संगठन लगातार मजबूत हुआ। उन्होंने फीनिक्स पक्षी का उदाहरण देते हुए कहा कि मान्यता है कि फीनिक्स राख से दोबारा जन्म लेता है। इसी तरह भाजपा को जितना कमजोर करने का प्रयास किया जाता है, पार्टी उतनी ही ताकत के साथ दोबारा खड़ी होती है।

समान नागरिक संहिता का भी किया उल्लेख

मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्य प्रदेश उन बड़े राज्यों में शामिल हो गया है, जहां समान नागरिक संहिता लागू की गई है। उन्होंने सरकार की ह्यसबको समान दृष्टि की नीति पर जोर देते हुए कहा कि सरकार समाज के हर वर्ग को समान नजर से देखती है। उन्होंने कहा कि मुस्लिम की बहन भी हमारी बहन है और हिंदू की बहन भी हमारी बहन है। मुख्यमंत्री ने इसे सरकार की समानता और सामाजिक समरसता की नीति से जोडकर प्रस्तुत किया।

कृष्ण जन्माष्टमी को कुशाभाऊ ठाकरे को समर्पित बताया

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस बार की श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कुशाभाऊ ठाकरे को समर्पित है। उन्होंने प्रदेशवासियों को जन्माष्टमी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के जीवन और उनके संदेश से नई पीढ़ी को सीख लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि श्रीकृष्ण ने जीवन में अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना किया, लेकिन संघर्षों के बीच भी आगे बढ़ते रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि कठिन परिस्थितियों में मुस्कुराते हुए आगे बढ।

दर्जनों डिप्टी रेंजर बिना प्रमोशन रिटायर, डिप्टी रेंजरों ने सीएम को सौंपा ज्ञापन

डीपीसी हो चुकी, फिर भी पदोन्नति आदेश अटके

भोपाल । वन विभाग के डिप्टी रेंजरों की पदोन्नति का मामला एक बार फिर मुख्यमंत्री कार्यालय तक पहुंच गया है। विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठक हो जाने के बावजूद डिप्टी रेंजर से रेंजर पद पर पदोन्नति के आदेश जारी नहीं हो सके हैं। प्रशासनिक स्वीकृति के लिए फाइल करीब एक माह से मुख्यमंत्री कार्यालय में लंबित होने का आरोप लगाते हुए मध्य प्रदेश वन कर्मचारी मंच ने मुख्यमंत्री के नाम उनके सचिव पी. सुदामा खाड़े को मंत्रालय में ज्ञापन सौंपा।

वन कर्मचारी मंच ने मुख्यमंत्री के साथ ही मुख्य सचिव और प्रमुख सचिव, वन को भी ज्ञापन देकर तत्काल पदोन्नति आदेश जारी करने की मांग की है। प्रतिनिधिमंडल को अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि एक सप्ताह में मांग का निराकरण करने का प्रयास किया जाएगा। प्रतिनिधिमंडल में मंच के प्रदेश अध्यक्ष अशोक पांडे, सुभाष शर्मा, कार्यवाहक रेंजर हरि सिंह गुर्जर, लव प्रकाश पाराशर सहित अन्य पदाधिकारी शामिल रहे।

डीपीसी के बाद भी आदेश का इंतजार

मंच के प्रदेश अध्यक्ष अशोक पांडे ने कहा कि डिप्टी रेंजरों को रेंजर पद पर पदोन्नति देने के लिए विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक पहले ही हो चुकी है। इसके बाद प्रशासनिक स्वीकृति के लिए फाइल मुख्यमंत्री कार्यालय भेजी गई, लेकिन करीब एक माह से फाइल आगे नहीं बढ़ी है। इसी वजह से पदोन्नति के आदेश जारी नहीं हो पा रहे हैं। उनका कहना है कि मुख्यमंत्री की ओर से कई बार पदोन्नति का लाभ देने की घोषणा की जा चुकी है, लेकिन जमीनी स्तर पर डिप्टी रेंजर अभी भी आदेश का इंतजार कर रहे हैं। इस देरी का सीधा असर उन कर्मचारियों पर पड़ा है, जिनकी सेवानिवृत्ति नजदीक है।

जुलाई-अगस्त में कई डिप्टी रेंजर बिना प्रमोशन हुए रिटायर

वन कर्मचारी मंच के मुताबिक जुलाई और अगस्त में दर्जनों डिप्टी रेंजर बिना पदोन्नति के ही सेवानिवृत्त हो गए। मंच का दावा है कि इससे संबंधित कर्मचारियों को न केवल सम्मानित पद से वंचित होना पड़ा, बल्कि पदोन्नति से मिलने वाले वेतनमान का भी नुकसान हुआ। कर्मचारियों का तर्क है कि जब डीपीसी की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है तो प्रशासनिक स्वीकृति में देरी के कारण उन्हें पदोन्नति का लाभ नहीं मिलना न्यायसंगत नहीं है।

सितंबर में दूसरी डीपीसी का समय, पुरानी फाइल पहले निपटाने की मांग

मंच ने यह भी कहा कि सितंबर में दूसरी डीपीसी की बैठक का समय आ चुका है, ऐसे में पहले से लंबित डिप्टी रेंजरों की पदोन्नति का मामला और उलझ सकता है। संगठन ने मांग की है कि नई डीपीसी की प्रक्रिया शुरू होने से पहले लंबित फाइल को मंजूरी देकर डिप्टी रेंजरों को रेंजर पद पर पदोन्नति के आदेश जारी किए जाएं। वन कर्मचारी मंच ने चेतावनी दी है कि यदि एक सप्ताह में पदोन्नति आदेश जारी नहीं हुए तो संगठन आगे की रणनीति तय करेगा।

हाउसिंग बोर्ड के आवंटियों को बड़ी राहत.. बकाया लीज रेंट पर वन टाइम सेटलमेंट

31 अक्टूबर तक चुका सकेंगे एकमुश्त राशि

भोपाल । मध्यप्रदेश हाउसिंग बोर्ड के ऐसे आवंटियों के लिए राहत की खबर है, जिन पर लंबे समय से लीज रेंट यानी भू-भाटक बकाया है। बोर्ड ने वन टाइम सेटलमेंट योजना की समयसीमा बढ़ाकर 31 अक्टूबर कर दी है। पहले इस योजना का लाभ लेने की अंतिम तारीख 31 मार्च निर्धारित थी। समयसीमा बढ? से वे आवंटी भी योजना का लाभ उठा सकेंगे, जो निर्धारित अवधि में बकाया राशि का एकमुश्त भुगतान नहीं कर पाए थे। वन टाइम सेटलमेंट के तहत बकाया लीज रेंट का एकमुश्त भुगतान करने पर नियमानुसार विशेष छूट दी जाएगी।

हाउसिंग बोर्ड के अध्यक्ष ओम जैन के मुताबिक प्रदेश के विभिन्न शहरों में लगाए जा रहे समस्या समाधान शिविरों में आवंटी योजना की समयसीमा बढ़ाने की मांग कर रहे थे। आवंटियों की मांग और जनहित को देखते हुए अवधि बढ़ाने का फैसला लिया गया। बोर्ड के आयुक्त गौतम सिंह ने बताया कि बड़ी संख्या में ऐसे हितग्राही हैं, जो पहले तय अंतिम तारीख तक योजना का लाभ नहीं ले सके। उन्हें एक और मौका देने के उद्देश्य से अब 31 अक्टूबर तक वन टाइम सेटलमेंट का लाभ दिया जाएगा।

एकमुश्त भुगतान पर मिलेगी छूट

वन टाइम सेटलमेंट योजना का मुख्य लाभ यह है कि बकाया लीज रेंट का एकमुश्त भुगतान करने वाले पात्र आवंटियों को नियमानुसार विशेष छूट मिलेगी। हालांकि, छूट की वास्तविक राशि प्रत्येक आवंटी के बकाया और लागू नियमों के आधार पर तय होगी। इसलिए आवंटियों को अपनी बकाया राशि और उस पर मिलने वाली छूट की जानकारी संबंधित हाउसिंग बोर्ड कार्यालय से लेनी होगी।

पुराने नियम और शर्तें ही लागू रहेंगी

समयसीमा बढ़ाने के बावजूद योजना की बाकी शर्तों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। बोर्ड के अनुसार वन टाइम सेटलमेंट के सभी अन्य नियम और शर्तें मूल परिपत्र के मुताबिक ही लागू रहेंगे। इसका मतलब यह है कि केवल अंतिम तारीख बढ़ाई गई है; योजना का लाभ लेने के लिए आवंटियों को निर्धारित प्रक्रिया और पात्रता शर्तों का पालन करना होगा। बकाया लीज रेंट, देय राशि और वन टाइम सेटलमेंट के तहत मिलने वाली छूट की जानकारी लेने के लिए आवंटी अपने संबंधित हाउसिंग बोर्ड कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं। इसके लिए संबंधित कार्यपालन यंत्री या संपत्ति अधिकारी से जानकारी ली जा सकती है। बोर्ड प्रशासन ने मैदानी अधिकारियों को भी निर्देश दिए हैं कि पात्र आवंटियों को योजना की जानकारी दी जाए और अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके।

31 अक्टूबर के बाद मौका मिलेगा या नहीं

फिलहाल बोर्ड ने योजना की अंतिम तारीख 31 अक्टूबर तय की है। इसके बाद समयसीमा फिर बढ़ाई जाएगी या नहीं, इसकी कोई जानकारी इस आदेश में नहीं दी गई है। इसलिए जिन आवंटियों पर लीज रेंट बकाया है और जो वन टाइम सेटलमेंट के तहत छूट लेना चाहते हैं, उनके लिए सबसे अहम तारीख अब 31 अक्टूबर 2026 है।

सैटरडे रनिंग ड्राइव के नतीजों ने वरिष्ठ अधिकारियों की बढ़ाई चिंता

फिटनेस टेस्ट ने खोली पुलिस की तैयारी की पोल

भोपाल । अपराधियों का पीछा करना हो, किसी आपात स्थिति में मौके पर पहुंचना हो या भीड़ नियंत्रण जैसी चुनौतीपूर्ण ड्यूटी–पुलिस की फुर्ती और शारीरिक क्षमता सीधे उसकी कार्यक्षमता से जुड़ी है। लेकिन भोपाल पुलिस की पहली सैटरडे रनिंग ड्राइव के नतीजों ने पुलिसबल की फिटनेस को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। फिटनेस टेस्ट में शामिल 45 वर्ष से कम उम्र के 396 जवानों में से 248 निर्धारित समय में 10 किलोमीटर की दौड़ पूरी नहीं कर सके। यानी युवा माने जाने वाले पुलिसबल में भी करीब 62 प्रतिशत जवान तय मानक पर खरे नहीं उतरे।

राजधानी के सभी 12 एसीपी संभागों में कराए गए टेस्ट में कुल 560 पुलिसकर्मी शामिल हुए। इनमें 349 जवान निर्धारित लक्ष्य हासिल नहीं कर सके। सबसे ज्यादा चिंता 45 वर्ष से कम उम्र के जवानों के प्रदर्शन ने बढ़ाई है, क्योंकि इसी वर्ग से बेहतर फिटनेस की उम्मीद की जाती है। युवा पुलिसकर्मियों के लिए मानक 60 मिनट में 10 किलोमीटर दौड़ निर्धारित किया गया था।

396 जवानों में केवल 148 ही यह लक्ष्य पूरा कर पाए। मिसरोद के 70, निशातपुरा के 49 और कोतवाली संभाग के 21 जवानों में से एक भी निर्धारित समय में 10 किमी की दूरी पूरी नहीं कर सका। शाहजहांनाबाद में 53 में से सिर्फ चार जवान मानक पर खरे उतरे। इसके उलट जहांगीराबाद के सभी 26 और टीटी नगर के सभी 22 जवानों ने निर्धारित समय में दौड़ पूरी की।

भोपाल के व्यापारियों को राहत की उम्मीद, सीएम बोले

कोर्ट में मजबूती से रखेंगे पक्ष, बेहतर समाधान निकालेंगे

भोपाल । भोपाल में व्यापारियों और रहवासियों की लंबे समय से चली आ रही परेशानियों को लेकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सरकार इस मामले को गंभीरता से ले रही है। सुप्रीम कोर्ट में चल रहे मामले में सरकार अपनी बात मजबूती से रखेगी और कोर्ट के निर्देश के अनुसार आगे का रास्ता निकाला जाएगा। शुक्रवार को मीडिया से बातचीत में मुख्यमंत्री ने कहा कि भोपाल से जुड़े सभी मुद्दों को सुप्रीम कोर्ट के सामने रखा जा रहा है। सरकार की कोशिश है कि व्यापारियों और स्थानीय लोगों के हितों को ध्यान में रखते हुए इस पुराने विवाद का ऐसा समाधान निकले, जिससे सभी पक्षों को राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि कोर्ट के मार्गदर्शन के आधार पर सरकार आगे की कार्रवाई करेगी।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के मौके पर मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि वे जानापाव जा रहे हैं। मान्यता है कि यहीं महर्षि परशुराम ने भगवान श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र प्रदान किया था। इस धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए सरकार जानापाव को प्रमुख तीर्थस्थल के रूप में विकसित करने की तैयारी कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में धार्मिक स्थलों के विकास से पर्यटन को बढ़ावा मिला है। उज्जैन में श्री महाकाल लोक बनने के बाद यहां आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों की संख्या में बड़ा इजाफा हुआ है। वर्ष 2022 तक उज्जैन में करीब 60 से 70 लाख श्रद्धालु और पर्यटक आते थे, जबकि अब यह संख्या करोड़ों तक पहुंच गई है।

भोपाल में शिक्षक दिवस पर होगा आंदोलन

पद स्थायी कराने 5 को प्रदर्शन करेंगे अतिथि शिक्षक

भोपाल । मध्य प्रदेश के हजारों अतिथि शिक्षक राजधानी के शाहजहानी पार्क में शिक्षक दिवस (5 सितंबर) के दिन प्रदर्शन करेंगे। प्रदर्शन के दौरान अतिथि शिक्षक तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा अतिथि शिक्षकों का वार्षिक अनुबंध करने और उन्हें बेरोजगार नहीं होने देने की घोषणा का पालन कराने की मांग करेंगे। वे सीधी भर्ती में बोनस अंक देकर स्थायी रोजगार देने के सरकार के फैसले की भी याद दिलाएंगे।

पुराने निर्माण बिलों से उच्च शिक्षा विभाग ने झाड़ा पल्ला

बजट बचाने के लिए कॉलेजों पर 8.72 करोड़ का बोझ

भोपाल । मध्य प्रदेश में आर्थिक तंगी के बीच सरकार जहां नए खर्च और खरीदी पर लगाम लगा रही है, वहीं पुराने निर्माण कार्यों के लंबित बिलों का बोझ भी अब सरकारी खजाने से हटाकर संस्थानों पर डाला जा रहा है। उच्च शिक्षा विभाग ने प्रदेश के 31 सरकारी कॉलेजों के 8 करोड़ 72 लाख 47 हजार 452 रुपए के लंबित बिलों का भुगतान राज्य शासन के मद से करने से इनकार कर दिया है। अब इन बिलों का भुगतान संबंधित कॉलेजों को अपनी जनभागीदारी समिति के मद से करना होगा।

खास बात यह है कि कॉलेज यदि इन पुराने बिलों का भुगतान जनभागीदारी समिति से करते हैं तो बाद में सरकार इसकी प्रतिपूर्ति या समायोजन नहीं करेगी। यानी जिन निर्माण कार्यों को कभी शासन की मंजूरी और राशि आवंटन के आधार पर शुरू कराया गया था, उनका बचा हुआ भुगतान अब कॉलेजों को अपने स्तर पर जुटाना होगा।

2022-23 में मंजूर कामों का भी भुगतान अटका

विभाग के आदेश से सामने आया है कि इनमें कई ऐसे निर्माण कार्य हैं जिन्हें वर्ष 2022-23 में मंजूरी देकर राशि आवंटित की गई थी। कुछ काम पूरे भी हो चुके हैं ।

रोज 175-200 बच्चे पहुंच रहे अस्पताल, 15-20 में निमोनिया के लक्षण

भोपाल में बच्चों पर वायरल का वार

भोपाल । मौसम में बदलाव के साथ राजधानी में बच्चों के बीच सर्दी-जुकाम, खांसी और बुखार के मामले तेजी से बढ़े हैं। जयप्रकाश जिला अस्पताल की बाल ओपीडी में रोजाना करीब 175 से 200 बच्चे पहुंच रहे हैं। इनमें लंबे समय से बुखार, लगातार खांसी और सांस लेने में परेशानी वाले बच्चे भी शामिल हैं। डॉक्टरों के मुताबिक रोजाना 15 से 20 बच्चों में निमोनिया के लक्षण मिल रहे हैं।

बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. राकेश भार्गव ने अभिभावकों को सलाह दी है कि बच्चे को कितने डिग्री बुखार है, केवल इसी आधार पर बीमारी की गंभीरता तय न करें। इससे ज्यादा महत्वपूर्ण बच्चे का व्यवहार और उसकी सामान्य गतिविधियां हैं। बुखार उतरने के बाद बच्चा सामान्य रूप से खेल रहा है, खाना-पीना ले रहा है तो स्थिति अपेक्षाकृत कम गंभीर हो सकती है। लेकिन हल्का बुखार होने के बावजूद बच्चा

लगातार सुस्त, चिड़चिड़ा या कमजोर नजर आए तो डॉक्टर को दिखाने में देरी नहीं करनी चाहिए।

72 घंटे तक रह सकता है बुखार

डॉक्टर के मुताबिक वायरल संक्रमण में करीब 72 घंटे तक बुखार रहना संभव है। इसलिए केवल तीन दिन बुखार रहने से घबराने की जरूरत नहीं है। हालांकि इस दौरान बच्चे की गतिविधियों पर नजर रखना जरूरी है। यदि बच्चा बुखार के बीच भी सामान्य प्रतिक्रिया दे रहा है और पर्याप्त खाना-पीना ले रहा है तो तत्काल घबराने की स्थिति नहीं होती। इसके विपरीत बच्चे की हालत लगातार बिगड़ रही हो तो चिकित्सकीय सलाह जरूरी है।

वायरल के बाद बैक्टीरियल संक्रमण का खतरा

डॉक्टरों का कहना है कि कुछ बच्चों में वायरल संक्रमण के बाद बैक्टीरियल संक्रमण हो सकता है। ऐसी स्थिति में निमोनिया का खतरा बढ़ जाता है। तेज बुखार, लगातार खांसी, सांस लेने में परेशानी, सांस का सामान्य से तेज चलना, कमजोरी और खाना-पीना कम होना चेतावनी के संकेत माने जा रहे हैं। राजधानी के श्वसन रोग संस्थान की ओपीडी में भी रोजाना करीब 4-5 निमोनिया के मरीज पहुंचने की जानकारी दी गई है।

मेडिकल स्टोर से खुद न खरीदें एंटीबायोटिक

बच्चों के इलाज में सबसे बड़ी चिंता डॉक्टरों ने बिना सलाह दवा देने की प्रवृत्ति को बताया है। कई अभिभावक मेडिकल स्टोर से सीधे एंटीबायोटिक लेकर बच्चे को देना शुरू कर देते हैं। कई बार दवा की मात्रा भी सही नहीं होती।

15 दिन की पैरोल का भी प्रावधान, जानकारी के अभाव में नहीं मिल रहा लाभ

जेल में नहीं, अस्पताल में होगा महिला कैदियों का प्रसव

भोपाल। मध्य प्रदेश की जेलों में बंद गर्भवती महिला कैदियों के प्रसव को लेकर जेल मुख्यालय ने स्पष्ट व्यवस्था की है। महिला कैदियों का प्रसव जेल में नहीं, बल्कि मेडिकल कॉलेज से संबद्ध अस्पताल या जिला अस्पताल में कराया जाएगा। साथ ही प्रसव के लिए महिला कैदी को 15 दिन की पैरोल देने का प्रावधान भी है। हालांकि जानकारी के अभाव में कई महिला कैदी इस सुविधा का लाभ नहीं ले पा रही हैं।जेल मुख्यालय अब गर्भवती कैदियों की निगरानी और मजबूत करने की तैयारी में है। खासतौर पर हाई रिस्क प्रेग्नेंसी वाली महिलाओं की पहले से पहचान की जाएगी, ताकि प्रसव के समय किसी आपात स्थिति में जेल के भीतर डिलीवरी कराने की नौबत न आए। वर्तमान में प्रदेश की जेलों में 10 गर्भवती महिला कैदी हैं। इनमें दो सजा प्राप्त कैदी हैं, जबकि बाकी विचाराधीन हैं।

हर सप्ताह विशेषज्ञ डॉक्टर से जांच

जेल महानिदेशक वरुण कपूर के अनुसार बड़ी जेलों में अस्पताल की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन गर्भवती महिला कैदियों को प्रसव के लिए नजदीकी शासकीय अस्पताल भेजा जाता है। गर्भावस्था के दौरान उनकी हर सप्ताह स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ से जांच कराई जाती है। इसका उद्देश्य मां और बच्चे दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

बच्चे के जन्म प्रमाण पत्र में जेल का नाम नहीं

सरकार ने महिला कैदियों से जन्म लेने वाले बच्चों को लेकर एक अहम मानवीय व्यवस्था भी की है। बच्चे के जन्म प्रमाण पत्र में जेल का उल्लेख नहीं किया जाएगा। जन्म स्थान के तौर पर संबंधित क्षेत्र या जिस अस्पताल में प्रसव हुआ है, उसका नाम दर्ज किया जाएगा। यानी बच्चे के जन्म प्रमाण पत्र से जेल में जन्म लेने की पहचान जुड? से रोका जाएगा।

पैरोल की जानकारी पहुंचाना चुनौती

प्रसव के लिए 15 दिन की पैरोल की सुविधा होने के बावजूद इसका लाभ सभी पात्र महिला कैदियों तक नहीं पहुंच पा रहा है। जेल प्रशासन के सामने अब चुनौती यह है कि महिलाओं को उनके अधिकार और उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी समय रहते दी जाए। हाल ही में नासिक की एक अदालत ने भी प्रसव के दौरान जेल में बच्चे के जन्म को महिला के लिए गंभीर मानसिक आघात बताते हुए जमानत का निर्देश दिया था।

विधिक मापविज्ञान (भारतीय मानक समय) नियम, 2026 ने खोला एक राष्ट्र, एक समय का नया अध्याय !

किशन सनमुखदास भावनानी

भारत की बदलती तस्वीर में अब समय की भी बारी! -घड़ी की सुई से डिजिटल क्रांति तकः एक राष्ट्र एक समय से बदलने जा रहा भारत! वैश्विक स्तरपर आज का भारत तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी,डिजिटल अर्थव्यवस्था और आधुनिक संचार व्यवस्था के दौर से गुजर रहा है। कभी देश में एक राष्ट्र, एक चुनाव,एक राष्ट्र, एक कर,एक राष्ट्र, एक राशन कार्ड एक राष्ट्र,एक ग्रिड,एक राष्ट्र, एक बाजार,एक राष्ट्र, एक कानून/समान नागरिक संहिता यानें यूनिफार्म सिविल कोड यानी समान नागरिक कानून की बहस/प्रस्ताव।एक राष्ट्र एक समय,पूरे देश की महत्वपूर्ण आधिकारिक और तकनीकी प्रणालियों के लिए आईएसटी को साझा समय-संदर्भ बनाना,जैसी अवधारणाओं पर चर्चा होती है,इसी व्यापक सोच की अगली महत्वपूर्ण कड़ी अब एक राष्ट्र, एक समय के रूप में सामने आ रही है। इसका सीधा अर्थ है कि भारत में कानूनी,प्रशासनिक, व्यावसायिक और महत्वपूर्ण तकनीकी कार्यों के लिए भारतीय मानक समय यानी आईएसटी को एक समान आधिकारिक समय-संदर्भ बनाया जाएगा।सुनने में यह केवल घड़ी का समय एक करने जैसा लग सकता है, लेकिन वास्तव में यह भारत की डिजिटल और तकनीकी व्यवस्था को अधिक सुरक्षित,सटीक और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बड़ा कदम है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह चाहूंगा कि सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि भारत में समय की आधिकारिक व्यवस्था क्या है। देश में भारतीय मानक समय यानी इंडियन स्टैंडर्ड टाइम (आईएसटी) लागू है,जो पूरे भारत के लिए एक ही आधिकारिक समय है।सामान्य जीवन में हम मोबाइल,कंप्यूटर,घड़ी या टीवी पर यही समय देखते हैं। लेकिन आधुनिक डिजिटल व्यवस्था में केवल घंटे और मिनट महत्वपूर्ण नहीं हैं। बैंकिंग लेन-देन, शेयर बाजार, इंटरनेट नेटवर्क,रेलवे सिग्नल, बिजली ग्रिड, डिजिटल भुगतान और सरकारी सर्वर जैसी प्रणालियों में सेकंड के छोटे हिस्से तक का समय महत्वपूर्ण हो सकता है। किसी डिजिटल लेन-देन का सही समय दर्ज होनाकई बार यह तय करता है कि भुगतान पहले हुआ या बाद में, आदेश कब दिया गया या किसी सिस्टम में कोई घटना ठीक किस समय हुई।टेलीकॉम ऑपरेटरों (जैसे बीएसएनएल, जिओ,एयरटेल) को अपने सर्वर्स और नेटवर्क टावरों को भारतीय परमाणु घड़ियों (एटॉमिक क्लॉक्स) के समय के साथ सिंक करना होगा।सटीक बिलिंगः डेटा उपयोग और कॉलिंग की समय-सीमा आधारित बिलिंग में ग्राहकों को अधिक पारदर्शिता मिलेगी। साथियों, इसी आवश्यकता को देखते हुए उपभोक्ता मामले विभाग ने 27 अगस्त 2026 को विधिक मापविज्ञान (भारतीय मानक समय) नियम, 2026 की अधिसूचना जारी की है। इन नियमों का उद्देश्य देशभर में कानूनी, प्रशासनिक,व्यावसायिक और अन्य आधिकारिक उद्देश्यों के लिए भारतीय मानक समय को एक समान समय -संदर्भ के रूप में स्थापित करना है। नियम आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशित होने की तारीख से 180 दिन बाद लागू होंगे।यह 180 दिनों की अवधि इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि सरकार,कंपनियों,संस्थानों और तकनीकी प्रणालियों को अपने सर्वर,नेटवर्कसॉफ्टवेयर और समय-संबंधी व्यवस्थाओं में आवश्यक बदलाव करने का अवसर मिलेगा। साथियों, एक राष्ट्र,एक समय की जरूरत आज इसलिए बढ़ गई है क्योंकि भारत अब केवल भौतिक अर्थव्यवस्था नहीं रहा।देश की अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा हिस्साडिजिटल नेटवर्क पर चलता है।एक व्यक्ति अपनेमोबाइल से कुछ सेकंड में दूसरे शहर में पैसा भेज सकता है। शेयर बाजार में हजारों लेन-देन अत्यंत कम समय में हो सकते हैं। बैंक के सर्वर देश के अलग-अलग हिस्सों में मौजूद हो सकते हैं। मोबाइल नेटवर्क लाखों उपकरणों को एक साथ जोड़ते हैं।बिजली ग्रिड लगातार उत्पादन और खपत का संतुलन बनाए रखते हैं। रेलवे और विमानन व्यवस्था समय के बेहद सटीक तालमेल पर निर्भर करती है। ऐसे में यदि अलग-अलग प्रणालियां अलग-अलग समय स्रोतों पर निर्भर हों और उनमें सूक्ष्म अंतर हो, तो डिजिटल रिकॉर्ड और विभिन्न प्रणालियों के बीच समन्वय प्रभावित हो सकता है।यही कारण है कि एक समान समय-संदर्भ केवल घड़ी मिलाने का मामला नहीं है, बल्कि डिजिटल भारत की आधारभूत संरचना को मजबूत करने का विषय है। बैंकिंग और डिजिटल भुगतान में प्रत्येक लेन-देन का टाइम- स्टैम्प महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति के खाते से पैसा कट गया लेकिन सामने वाले खाते में राशि कुछ देर बाद दिखाई दी, तो दोनों प्रणालियों में दर्ज समय की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है।एक विश्वसनीय और समान समय व्यवस्था ऐसे तकनीकी विवादों के समाधान को बहुत अधिक सटीकता से व्यवस्थित बना सकती है। साथियों इसका असर शेयर बाजार परिवहन व दूर संचार पर भी महत्वपूर्ण हो सकता है। आधुनिक शेयर बाजार में हजारों और लाखों ऑर्डर बहुत कम समय में दर्ज होते हैं। किस ऑर्डर को पहले दर्ज किया गया,किस समय कारोबार हुआ और किसी विशेष गतिविधि का टाइम- स्टैम्प क्या था,ये सभी बातें बाजार की पारदर्शिता के लिए महत्वपूर्ण हैं।भारतीय मानक समय पर आधारित अधिक सटीक समय-सिंक्रोनाइजेशन से वित्तीय बाजारों में रिकॉर्डिंग और निगरानी की व्यवस्था मजबूत हो सकती है।परिवहन क्षेत्र में भी इसका महत्व कम नहीं है। रेलवे में सिग्नलिंग, ट्रेन संचालन और समय- सारणी के लिए सटीक समय जरूरी है। हवाई अड्डों पर उड़ानों, सुरक्षा प्रक्रियाओं और विभिन्न परिचालन गतिविधियों का समन्वय समय के आधार पर होता है। लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में ट्रकों, मालगाड़ियों और अन्य परिवहन माध्यमों की वास्तविक समय में निगरानी की जाती है। इसलिए समान और विश्वसनीय समय-संदर्भ सप्लाई चेन को अधिक प्रभावी बनाने में मदद कर सकता है।दूरसंचार और इंटरनेट की दुनिया में समय-सिंक्रोनाइजेशन और भी महत्वपूर्ण है। मोबाइल नेटवर्क के अलग-अलग टावरों और नेटवर्क उपकरणों को एक- दूसरे के साथ तालमेल बनाकर काम करना पड़ता है। डेटा सेंटर और कंप्यूटर नेटवर्क भी समय के सटीक रिकॉर्ड पर निर्भर करते हैं। यही कारण है कि भारत में अपने विश्वसनीय समय-स्रोतों का विकास रणनीतिक महत्व रखता है।भविष्य में महत्वपूर्ण प्रणालियों के लिए विदेशी समय-स्रोतों पर निर्भरता कम करना भारत की तकनीकी आत्मनिर्भरता को मजबूत कर सकता है। साथियों, इसी संदर्भ में भारत की स्वदेशी उपग्रह प्रणाली नाविक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। नाविक भारत की क्षेत्रीय उपग्रह नेविगेशन प्रणाली है, जिसे इसरो ने विकसित किया है। उपग्रह-आधारित प्रणालियों से सटीक समय-संदर्भ प्राप्त किया जा सकता है। इसके साथ भारत अपने वैज्ञानिक और मेट्रोलॉजी संस्थानों के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर सटीक भारतीय मानक समय के प्रसार का बुनियादी ढांचा विकसित कर रहा है। इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण प्रणालियों को विश्वसनीय भारतीय समय-स्रोत उपलब्ध कराना है। इसी दिशा में वाइट रैबिट तकनीक भी महत्वपूर्ण है।सरल भाषा में समझें तो यह अत्यंत

एसआईआर के सवाल

निस्संदेह, किसी लोकतंत्र में चुनाव प्रक्रिया पारदर्शी व निष्पक्ष होनी चाहिए। साथ ही मतदाताओं की विश्वसनीयता भी उतनी जरूरी है ताकि वाजिब वोट ही चुनाव प्रक्रिया में निर्णायक भूमिका निभाए। इसी आलोक में नौ राज्यों व तीन केंद्रशासित प्रदेशों में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर प्रक्रिया को लेकर उठ रहे सवाल तार्किक समाधान मांगते हैं। इस प्रक्रिया में तुरत-फुरत की कार्यनीति के चलते कई राज्यों में अफरा-तफरी का आलम नजर आता है। जिसका दबाव जमीनी स्तर पर इस प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों पर पड़ रहा है। कई बूथ स्तरीय अधिकारी यानी बीएलओ बेहद तनाव में नजर आ रहे हैं। इनका कार्य मतदाता सूचियों को अपडेट करना है। पश्चिम बंगाल और कई अन्य राज्यों में कम समय में अधिक काम के दबाव के चलते कुछ बीएलओ के मरने व आत्महत्या करने के मामले सामने आए हैं। आरोप है कि उनके वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा ही नहीं बल्कि सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों द्वारा भी उन्हें परेशान किए जाने का आरोप है। हालांकि, इस अव्यवस्था के चलते ही चुनाव आयोग ने अब एसआईआर के कार्यक्रम को एक सप्ताह के लिए और बढ़ा दिया है। लेकिन कहना कठिन है कि इस कदम से बीएलओ का तनाव कम करने या विभिन्न हितधारकों की आशंकाओं को दूर करने में कोई खास मदद मिल सकेगी। कहा जा रहा है कि एक माह पहले शुरू हुई राष्ट्रव्यापी एसआईआर प्रक्रिया में कई तरह की बाधाएं आ रही हैं। इस प्रक्रिया में करीब 51 करोड़ मतदाता शामिल हैं, जो तकरीबन भारतीय आबादी का एक-तिहाई से भी ज्यादा। उनकी शिनाख्त से जुड़ी जानकारी को एक निश्चित समय सीमा में प्रमाणित कर पाना आसान नहीं है। कहा जा रहा है कि निर्धारित समय-सीमा व्यावहारिक नहीं है। तीन महीने की अवधि में गणना प्रपत्रों का वितरण, उसके बाद मसौदा मतदाता सूची का प्रकाशन और फिर अंतिम मतदाता सूची जारी करना आसान काम नहीं है। बहुत तेजी से काम को अंजाम देने का जिम्मा अधिकारियों पर अतिरिक्त दबाव बना रहा है। निस्संदेह, स्वतंत्र-निष्पक्ष चुनावों हेतु मतदाता सूचियों का शुद्धीकरण एक अनिवार्य शर्त है। लेकिन महत्वपूर्ण काम को जल्दबाजी में नहीं किया जाना चाहिए। मतदाता को यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त समय मिले ताकि उनके नाम सूचियों में सही ढंग से दर्ज हो सकें। यही बात बीएलओ के लिए भी लागू होती है, ताकि वे अनुपस्थित, स्थानांतरित, मृत या दोहराव वाले मतदाताओं का डेटा संकलित करने के लिए बूथ-स्तरीय एजेंटों के साथ मिलकर सुचारु रूप से काम कर सकें। यदि एसआईआर की प्रक्रिया किसी विवाद में उलझी रहती है तो इस अभियान का उद्देश्य ही विफल हो सकता है। बिहार की एसआईआर प्रक्रिया के घटनाक्रमों से मिले सबक को अन्य राज्यों में इस प्रक्रिया के दौरान याद रखा जाना चाहिए। निस्संदेह, स्तरहीन व संदिग्ध एसआईआर हमारे चुनावी लोकतंत्र की विश्वसनीयता को ठेस पहुंचा सकता है। उल्लेखनीय है कि विशेष गहन पुनरीक्षण की यह प्रक्रिया मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, केरल, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, गोवा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों तथा अंडमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप व पुडुचेरी केंद्रशासित प्रदेशों में जारी है। उल्लेखनीय है कि जहां बीएलओ पर कार्यदबाव व समय सीमा को लेकर सवाल उठ रहे हैं, वहीं कई राज्यों में बीएलओ के खिलाफ मामले दर्ज करने के भी आरोप लगे हैं।

रचनात्मक कार्य : पूर्ण स्वराज्य की अहिंसक राह

'सत्य ही ईश्वर है', 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है', 'सेवक की प्रार्थना', 'एकादश व्रत' और 'अचूक ताबीज का मंत्र' देने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने रचनात्मक कार्यों को विशेष महत्व दिया। गांधी विचार और जीवनशैली में रचनात्मक कार्यों का अपना स्थान है। व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति/सृष्टि के लिए इनकी उपयोगिता और सार्थकता है। रचनात्मक कार्य की महत्ता पर विचार करते हुए बापू ने स्पष्ट कहा था कि 'रचनात्मक कार्य ही पूर्ण स्वराज्य या मुकम्मल आजादी को हासिल करने का सच्चा और अहिंसक रास्ता है। उसकी पूरी-पूरी सिद्धि ही संपूर्ण स्वतंत्रता है।' उनके अनुसार, 'सत्य और अहिंसात्मक साधनों द्वारा पूर्ण स्वराज्य की यानी पूरी-पूरी आजादी की रचना है।'

रमेश चंद शर्मा

बापू के अपने शब्दों में, 'राष्ट्र के प्रत्येक घटक की और उसमें भी उसके गरीब-से-गरीब व्यक्ति की स्वतंत्रता की सिद्धि।' यही स्वराज्य की मूल कसौटी है। इसके लिए केवल राजनीतिक संघर्ष पर्याप्त नहीं था। गांधी ने कहा, 'स्वराज्य की स्थापना के लिए जिस अहिंसक पुरुषार्थ की जरूरत है, उसके लिए यह जरूरी है कि रचनात्मक कार्यक्रम का अमल समझ-बूझकर किया जाय। 'सविनय कानून-भंग और सत्याग्रह, चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक, रचनात्मक कार्यों के सहायक हैं। वे समाज में अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति पैदा करते हैं और रचनात्मक कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने का अवसर देते हैं। गांधी ने कहा था, 'सविनय कानून-भंग या सत्याग्रह, फिर वह सामूहिक हो या व्यक्तिगत, रचनात्मक कार्य का सहायक है, और वह सशस्त्र विद्रोह का स्थान भलीभांति ले सकता है। 'इसलिए गांधी के यहां संघर्ष और निर्माण अलग-अलग प्रक्रियाएं नहीं हैं। सत्याग्रह अन्याय का प्रतिरोध करता है, जबकि रचनात्मक कार्य उस समाज के निर्माण की कोशिश करता है जिसमें अन्याय और हिंसा के लिए जगह कम होती जाए। गांधी ने इसी संदर्भ में कहा, 'सत्याग्रह में तालीम का अर्थ है, रचनात्मक कार्यक्रम या तामीरी काम। 'रचनात्मक कार्य हिंसा, द्वेष, अलगाव, शोषण, बेरोजगारी और सामाजिक रिक्तता का विकल्प प्रस्तुत करता है। समाज को स्वावलंबी, सक्रिय, उत्पादक और सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ उसे जोड़ने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में समता, सक्रियता, कुशलता, समझदारी, साझापन, जागरूकता, निर्भयता, शिक्षा और संगठन को बढ़ावा दिया जा सकता है। रचनात्मक कार्यों का एक महत्वपूर्ण पक्ष समाज के प्रत्येक घटक से संपर्क और संवाद स्थापित करना है। इसके माध्यम से लोगों के बीच बातचीत का सिलसिला शुरू होता है। किसी समाज में प्रवेश का उसमें किसान, मजदूर, आदिवासी, स्त्री, विद्यार्थी, गरीब, बीमार और समाज के वे लोग भी शामिल थे, जिन्हें मुख्यधारा अक्सर पीछे छोड़ देती है। इसीलिए रचनात्मक कार्यक्रम का लक्ष्य समाज के किसी लचक और व्यावहारिकता दिखाई देती है। रचनात्मक कार्यों का चयन समय, स्थान, क्षेत्र, माहौल, वातावरण, अपनी क्षमता और आवश्यकता के अनुसार किया जा सकता है। विचार-विमर्श, चिंतन-

यह ऐसा रास्ता है, जहां सेवा और संवाद एक-दूसरे से जुड़ते हैं। लोगों की वास्तविक समस्याओं को समझने और उन्हें समाधान की प्रक्रिया में सहभागी बनाने का अवसर मिलता है। गांधी ने रचनात्मक कार्यक्रम की सूची में कौमी एकता, अस्पृश्यता-निवारण, शराबबंदी, खादी, ग्रामोद्योग, गांव की सफाई, नई या बुनियादी तालीम, बड़ों की तालीम, स्त्रियां, आरोग्य के नियमों की शिक्षा, प्रांतीय भाषाएं, राष्ट्रभाषा, आर्थिक समानता, किसान, मजदूर, आदिवासी, कोढ़ी और विद्यार्थी सहित 18 विषयों को रखा। पशु सुधार (गौ रक्षा), सविनय कानून-भंग और कांग्रेस को भी 'रचनात्मक कार्यक्रम : उसका रहस्य और स्थान' में शामिल किया गया है। इस सूची को देखने से गांधी की सामाजिक दृष्टि की व्यापकता समझ में आती है। उनके लिए राष्ट्र केवल राजनीतिक संस्था नहीं था। एक हिस्से का सुधार नहीं, बल्कि समग्र सामाजिक परिवर्तन था।

रचनात्मक कार्यक्रम की एक विशेषता यह भी है कि गांधी ने इसे अंतिम या अपरिवर्तनीय सूची नहीं माना। उन्होंने इसकी प्रस्तावना में स्पष्ट किया था कि 'इसमें शामिल किये गये विषय किसी खास सिलसिले से नहीं लिखे गये हैं; निश्चय ही उन्हें उनके महत्व के अनुसार स्थान नहीं मिला है। ' उन्होंने आगे कहा, 'किसी खास विषय को, जो पूर्ण स्वराज्य की रचना की दृष्टि से अपना महत्व रखता है, इस कार्यक्रम में जगह नहीं मिली है, तो उन्हें समझ लेना चाहिए कि वह जान-बूझकर नहीं छोड़ा गया है। वे बिना हिचकिचाये उसे मेरी सूची में शामिल कर लें और मुझे बता दें। मेरी यह सूची पूर्ण होने का दावा नहीं करती; यह तो महज मिसाल के तौर पर पेश की गयी है। 'इस कथन में गांधी के विचार की मनन और स्थानीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए नए कार्यों को इसमें शामिल करने की गुंजाइश बनी रहती है। यही बात आज के संदर्भ में रचनात्मक कार्यक्रम को प्रासंगिक बनाती है। गांधी के समय जिन समस्याओं के समाधान के लिए खादी, ग्रामोद्योग, नई तालीम या गांव की सफाई जैसे कार्यक्रम सामने आए थे, आज उनके रूप बदल सकते हैं, लेकिन उनकी मूल भावना बनी रह सकती है। स्थानीय रोजगार, स्वावलंबन, श्रम की प्रतिष्ठा, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक समता और पर्यावरण संरक्षण जैसे सवालों को आज के रचनात्मक कार्यक्रम का हिस्सा बनाया जा सकता है। गांधी का जोर इस बात पर था कि परिवर्तन बाहर से थोपा न जाए, बल्कि समाज की अपनी भागीदारी से पैदा हो। रचनात्मक कार्य इसी भागीदारी का रास्ता खोलता है। इसमें व्यक्ति केवल किसी अभियान का दर्शक नहीं रहता, बल्कि अपने जीवन और समाज को बदलने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाता है। आज हिंसा, द्वेष, सामाजिक अलगाव, आर्थिक असमानता, बेरोजगारी और पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियां हमारे सामने हैं। ऐसे समय में रचनात्मक कार्य को केवल गांधी के समय की राजनीतिक रणनीति मानना उसके व्यापक अर्थ को सीमित करना होगा। इसका मूल संदेश आज भी यही है कि समाज को बदलने के लिए प्रतिरोध के साथ निर्माण जरूरी है। 'रचनात्मक कार्यक्रम : उसका रहस्य और स्थान' इस दृष्टि को समझने की महत्वपूर्ण पुस्तक है। 64 पृष्ठों की यह पुस्तक आकार में छोटी है, लेकिन गांधी के सामाजिक और राजनीतिक चिंतन को समझने के लिए उपयोगी है। गांधी विचार साहित्य व्यापक स्तर पर उपलब्ध है। उसके स्वाध्याय से रचनात्मक कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं को समझा जा सकता है। गांधी को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के नेता के रूप में देखना उनके विचार को अधूरा समझना होगा। उनका स्वराज्य व्यक्ति की स्वतंत्रता, समाज की समता, आर्थिक न्याय, श्रम की प्रतिष्ठा और अहिंसक सामाजिक व्यवस्था से जुड़ा था। रचनात्मक कार्य इन सभी को जोड़ने वाला माध्यम था। इसलिए आज गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम को पढ़ते हुए सबसे जरूरी सवाल यह है कि हमारे समय के रचनात्मक कार्य कौन-से हों। किन कामों से समाज में स्वावलंबन बढ़ेगा, किनसे अलगाव कम होगा, किनसे अंतिम व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित होगी और किनसे हिंसा के स्थान पर सहयोग की संस्कृति विकसित होगी–इन सवालों पर विचार करना गांधी के रचनात्मक चिंतन को वर्तमान से जोड़ना है।

मल्टीनेशनल और टेक कंपनियों से ईस्ट इंडिया कंपनी जैसा खतरा?

सनत जैन

इतिहास कभी मरता नहीं है, वह बार-बार नए रूप में हमारे सामने आता है। सवाल यह है, क्या भारत ने ईस्ट इंडिया कंपनी के इतिहास से कोई सबक सीखा है? 18वीं शताब्दी में व्यापार करने आई यह कंपनी धीरे-धीरे इतनी शक्तिशाली हो गई, उसने भारत के बड़े हिस्से पर राजनीतिक और प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित कर लिया। व्यापार उसके लिए केवल कारोबार नहीं था, बल्कि सत्ता तक पहुंचने का रास्ता भी बन गया। आज परिस्थितियां बदली हैं, कंपनियों के नाम बदल गए हैं, तकनीक बदल गई है, सवाल फिर वही खड़ा है– क्या आर्थिक शक्ति धीरे-धीरे राजनीतिक और सामाजिक शक्ति के रूप में ईस्ट इंडिया कंपनी के इतिहास को दोहरा रही है। ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापारिक समझौतों, वित्तीय सहायता, सैन्य सुरक्षा और राजनीतिक हस्तक्षेप के जरिए भारतीय रियासतों में अपना प्रभाव बढ़ाया। अनेक भारतीय शासक तत्काल लाभ और सुरक्षा के लिए कंपनी पर निर्भर होते चले गए। परिणाम यह हुआ कि जिस कपंनी को व्यापार के लिए चुना गया था, वही धीरे-धीरे शासक बन गया। आज भारत, 140 करोड़ से अधिक आबादी का देश है। हमारे सामने तलवार लेकर कोई विदेशी कंपनी नहीं खड़ी है। डिजिटल युग में सत्ता का स्वरूप बदल चुका है। डेटा, तकनीक, संचार नेटवर्क, डिजिटल भुगतान, सोशल मीडिया, क्लाउड, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ई-कॉमर्स के आधुनिक दौर में यह नए सामरिक संसाधन हैं। जिस कंपनी के पास करोड़ों नागरिकों के व्यवहार, पसंद, आर्थिक गतिविधियों और संचार से जुड़ा विशाल डेटा है, उसके पास केवल व्यापारिक ताकत नहीं रहती; वह समाज की दिशा को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। 1990 दशक के बाद भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए तेजी से खुला। विदेशी निवेश और वैश्विक व्यापार ने भारत को पूंजी, तकनीक और रोजगार के नए अवसर दिए। इसमें कोई संदेह नहीं है, बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्थिक विकास के साथ एक दूसरा सवाल पैदा हुआ, क्या सरकारों ने आर्थिक उदारीकरण के साथ उतनी ही मजबूती से नागरिकों के अधिकारों और बाजार में प्रतिस्पर्धा की, सुरक्षा को लेकर चिंता की। 2014 के बाद सभी क्षेत्रों में विदेशी निवेश के रास्ते खुले। रक्षा, मीडिया, बैंकिंग सहित संवेदनशील क्षेत्रों में भी निजी और विदेशी पूंजी की भूमिका बढ़ी। भारतीय कंपनियों और वैश्विक कंपनियों के बीच साझेदारियां हुईं। यह आर्थिक विकास का हिस्सा हो सकता है, लेकिन जब बड़ी कंपनियां इतनी शक्तिशाली हो जाएं, कि बाजार, उपभोक्ता और सरकार, तीनों उनकी तकनीकी व्यवस्था पर निर्भर होने लगें, तब लोकतंत्र के लिये ईस्ट इंडिया कंपनी जैसा खतरा पैदा होता है। ईस्ट इंडिया कंपनी के पास बंदूक थी; आज की डिजिटल कंपनियों के पास एल्गोरिद्म है। उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापारिक रास्तों को माध्यम बनाकर शासक को नियंत्रित करती थी। आज डिजिटल कंपनियां सूचना और संचार माध्यम से शासन को प्रभावित कर रही हैं। उस समय सत्ता पर कब्जे का रास्ता आर्थिक निर्भरता से होकर जाता था। वर्तमान में डिजिटल निर्भरता उससे भी बड़ा जोखिम पैदा कर रही है। सबसे बड़ा खतरा तब पैदा होता है जब सरकारें भी निजी क्षेत्र की कंपनियों के तकनीकी ढांचे पर अत्यधिक निर्भर हो जाएं। नागरिकों की पहचान, भुगतान, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और प्रशासन का बड़ा हिस्सा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर निर्भर हो गया है। ऐसे में प्रश्न केवल यह नहीं रह जाता, कंपनी कितना मुनाफा कमा रही है। प्रश्न यह है, टेक एवं बहुराष्ट्रीय कंपनी के पास कितनी शक्तिशाली हो रहीं है। उस शक्ति पर संविधान, शासन एवं लोकतांत्रिक व्यवस्था का नियंत्रण कितना है? कॉर्पोरेट लॉबिंग भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में बड़ी चुनौती है। कानून जनता के हित में बनेंगे या उन कंपनियों के हित में बनेंगे, जिनके पास सरकारों और नीति-निर्माताओं को प्रभावित करने के लिए विशाल संसाधन हैं। यह सवाल दुनिया के अनेक लोकतांत्रिक देशों में उठ रहा है। अमेरिका और यूरोप में बिग टेक की बाजार शक्ति, डेटा नियंत्रण और उनके जनीतिक प्रभाव पर जो बहस हो रही है, वह इसी चिंता को दर्शाती है। भारत के सामने चुनौती विदेशी कंपनियॉं अकेली की नहीं हैं, चुनौती है, किसी भी कंपनी का इतना शक्तिशाली हो जाना कि सरकार, बाजार और नागरिक उसके बिना आर्थिक एवं सामाजिक रूप से अशक्त हो जायें। यह शक्ति विदेशी कंपनी के पास हो या भारतीय कंपनी के पास, लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए खतरा समान है। ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत को सिखाया था, जब राज्य कमजोर और आर्थिकहित अत्याधिक शक्तिशाली हो जाएं, तो शासन व्यवस्था खतरे में पड़ती हैं। स्वतंत्र भारत में उसी इतिहास को, डिजिटल युग की रोशनी में देखने की जरूरत है।

आज का राशिफल

मेष- अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम वाला बन रहा है। शुभांक-1-5-7

वृष - अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। शुभांक-2-5-7

मिथुन - बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-3-6-7

कर्क - अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, ड्क्षचता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक-4-3-6

सिंह - दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से बचा जाए तो अच्छा है। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। शुभांक-4-6-9

कन्या- सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। सुख-आनंद कारक समय है। आगे बढने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। शुभांक-3-5-6

तुला - भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। पारिवारिक विवाद टालें। आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। मध्याह्न से ही आशाएं बलवती होंगी। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निपटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। कामकाज की अधिकता रहेगी। शुभांक-2-6-7

वृश्चिक - व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। बातचीत में संयम बरतें। व्यावसायिक उपक्रम में उलटफेर की शुरूआत हो सकती है। शुभांक-1-5-7

धनु - खान-पान में विशेष सावधानी बरतें। मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। बातचीत में संयम बरतें। आय के योग बनेगें। शुभांक-2-4-5

मकर - मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। परिवार के साथ मनोरांजनिक स्थल की यात्रा होगी। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। भविष्य की योजनाओं पर विचार विमर्श होगा। अपनों का सहयोग होगा। अपने आपको अधिक सक्रिय पायेगें। शुभांक-5-7-9

कुम्भ- शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों का समागम भी। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताए भी बढ़ेगी। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति मिलेगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। शुभांक-3-6-9

मीन- स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। शुभांक-3-5-6

यूपी में 23 जिलों में बाढ़, 16 हजार का रेस्क्यू

उत्तर प्रदेश में लगातार हो रही बारिश से 23 जिलों में बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं। वाराणसी और चित्रकूट सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। अब तक 16 हजार से अधिक लोगों को बाढ़ प्रभावित इलाकों से रेस्क्यू किया जा चुका है। बिहार के 16 जिलों में बाढ़ से करीब 5 लाख लोग प्रभावित हैं। गंगा समेत 8 प्रमुख नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। पटना में गंगा का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। इसे देखते हुए पटना सुरक्षा दीवार के सभी 108 रास्तों को बंद कर दिया गया है, ताकि नालों के जरिए शहर में पानी न घुसे।

मध्य प्रदेश में मंदाकिनी और नर्मदा नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। वहीं, छतरपुर, सतना, मंडला, मैहर समेत कई जिलों में बाढ़ के हालात बने हुए हैं। छतरपुर के कुटनी और जबलपुर के बरगी बांध से पानी छोड़ा जा रहा है। मौसम विभाग ने प्रदेश में अगले 48 घंटों के लिए भारी बारिश की चेतावनी जारी की है।

हिमाचल प्रदेश में इस मानसून सीजन में बारिश से जुड़ी घटनाओं में अब तक 266 लोगों की मौत हो चुकी है। इनमें 158 मौतें सड़क हादसों, 18 लैंडस्लाइड, 13 डूबने और एक मौत फ्लैश फ्लड के कारण हुई है। वहीं, अन्य मौतें अलग-अलग कारणों से हुई हैं।

न्यूज ट्रेक

वरिष्ठ आईपीएस अफसर जग मोहन आईबी के विशेष निदेशक नियुक्त

नई दिल्ली. एजेंसी। भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के वरिष्ठ अधिकारी जग मोहन को खुफिया ब्यूरो (आईबी) का विशेष निदेशक नियुक्त किया गया है। वह 1995 बैच के बिहार कैडर के आईपीएस अधिकारी हैं। वह वर्तमान में आईबी में अतिरिक्त निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। कार्मिक मंत्रालय के एक आदेश के अनुसार, नियुक्ति से संबंधित मंत्रिमंडल की समिति ने आईबी में विशेष निदेशक के पद पर मोहन की नियुक्ति को उनकी सेवानिवृत्ति की तारीख यानी 30 जून, 2031 तक के लिए मंजूरी दी है। उनके बैच के पांच अन्य अधिकारियों को भी उनके संबंधित संगठनों में विशेष महानिदेशक (डीजी) स्तर के पदों पर नियुक्त किया गया है।

दिशा सालियान केस : नीतेश राणे ने आदित्य ठाकरे पर साधा निशाना

मुंबई. एजेंसी। दिशा सालियान की मौत के मामले में बांबे हाई कोर्ट द्वारा सीबीआई जांच के आदेश के बाद महाराष्ट्र के मंत्री नीतेश राणे ने कहा कि यदि शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे और इस मामले में जिन अन्य लोगों के नाम सामने आए हैं, उनका घटना से कोई संबंध नहीं है तो उन्हें सामने आकर अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सीबीआई जांच से इस मामले से जुड़े तथ्यों और आरोपों की सच्चाई सामने आएगी। राणे ने कहा कि हम पहले दिन से स्पष्ट थे कि यह आत्महत्या नहीं, बल्कि हत्या का मामला है। अब सीबीआई जांच शुरू होगी और एफआईआर दर्ज की जाएगी। महाराष्ट्र के मंत्री ने कहा कि उनकी सबसे बड़ी अपेक्षा यह है कि जांच में कथित तौर पर साक्ष्यों को नष्ट करने और सत्ता के दुरुपयोग के आरोपों की भी पड़ताल की जाए।

सिंगर अंकित बालियान हत्याकांड में शूटरों ने करनाल से खरीदे थे सिम

शामली. एजेंसी। हरियाणवी सिंगर अंकित बालियान की हत्या करने से पहले शूटरों ने करनाल से सिम कार्ड खरीदा था। पुलिस ने सिमकार्ड बेचने वाले दुकानदार से पूछताछ की। अब पुलिस संदिग्ध युवक की तलाश में भी जुट गई है। पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि आरोपितों ने हत्याकांड से तीन दिन बाद धमदाहा (पूर्णिया, बिहार) पहुंचकर सिमकार्ड से स्नैपचैट की आइडी बनाई थी। इसके अलावा एक सिमकार्ड बिहार से भी खरीदा था, जिसका इस्तेमाल भी स्नैप चैट चलाने के लिए किया गया था। हत्याकांड में शामिल दो शूटरों सुमित और मोहित को पुलिस मुठभेड़ में ढेर कर चुकी है। वहीं, फरार चल रहे दोनों शूटरों आर्यन और सत्यम पर पुलिस ने इनाम बढ़ाकर एक-एक लाख रुपये कर दिया है। 26 अगस्त को जिम के बाहर अंकित की चार शूटरों ने गोलियों से भूनकर हत्या कर दी थी। इस केस में एक सीसीटीवी फुटेज इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हुआ, जो 26 अगस्त को सवा तीन बजे का है। वीडियो में शूटर आर्यन और सत्यम के साथ एक अन्य संदिग्ध युवक भी दिखाई दे रहा है।

इस्कॉन टेंपल में निशांत ने किया राधा-कृष्ण का अभिषेक

राज्यपाल ने बाल कृष्ण को झुलाया ; जन्माष्टमी पर 8 टन फूलों से सजावट, 150 कैमरों से निगरानी

पटना। पूरे बिहार में आज धूमधाम से जन्माष्टमी मनाई जा रही है। पटना के इस्कॉन टेंपल में 108 चांदी के कलश से भगवान का अभिषेक किया जाएगा। मुख्य पूजा की शुरुआत 11 बजे से शुरू हुई। स्वास्थ्य मंत्री निशांत कुमार ने मंदिर में शंख से राधा-कृष्ण का अभिषेक किया।

वहीं, राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (रिटायर्ड) सैयद अता हसनैन भी इस्कॉन टेंपल पहुंचे और भगवान की आरती की। बाल कृष्ण को झूला झुलाया। जबकि मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी 3 बजे आकर कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे।

आज अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र का संयोग बन रहा है। इसके अलावा आज वृष राशि के चंद्रमा की साक्षी, वृष लग्न, रोहिणी नक्षत्र और मृगशिरा नक्षत्र का युग्म संयोग, हर्षण और वज्र योग का संयोग रहेगा।

150 से ज्यादा कैमरों से निगरानी की जा रही है। भक्तों से अनुरोध किया गया है कि वे मंदिर में प्रवेश से पहले अपने चप्पल-जूता की सुरक्षा की व्यवस्था का खुद करेंगे। ऑफिस की ओर से भक्तों की एंट्री होगी। मंदिर परिसर में किसी को भी रुकने की अनुमति नहीं दी जाएगी। भी? अधिक होने की वजह से ऐसी व्यवस्था की गई है कि भक्त अंदर जाएंगे और दर्शन करने के साथ ही बाहर निकल जाएंगे।

8 टन फूल से इस्कॉन की सज+वट

सुबह 4 बजे ही इस्कॉन मंदिर के पट खुल गए। रात 1ः30 बजे तक भक्त दर्शन कर सकते हैं। कीर्तन और भगवान राधा-कृष्ण का विशेष अभिषेक हो रहा है। सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक श्रद्धालुओं और विशेष अतिथियों के लिए अभिषेक की व्यवस्था रहेगी।

मंदिर की सजावट के लिए बेंगलुरु, पुणे और कोलकाता समेत विदेश से भी कई प्रकार के 8 टन फूल मंगाए गए हैं। इस बार मंदिर की सजावट विशेष आकर्षण का केंद्र रहेंगी, क्योंकि इस बार फूल बंगला बनाया जा रहा है। वहीं, पूरे दिन श्रद्धालुओं के लिए प्रसादम की व्यवस्था रहेगी।

अगले दिन 20,000 से ज्यादा श्रद्धालुओं के लिए महाप्रसाद बनेगा

टीएमसी के सदस्य वेणु विनोद दास ने कहा, श्री कृष्ण जन्माष्टमी शुक्रवार को विख्यात गाथिका प्रिया मलिक की प्रस्तुति खास होगी। वे श्रीकृष्ण भक्ति पर आधारित भजन और कार्यक्रमों की प्रस्तुति देंगी।

इसके बाद अगले दिन 5 सितंबर को इस्कॉन के फाउंडर आचार्य एसी भक्ति वेदांत स्वामी प्रभुपाद का जन्म दिवस मनाया जाएगा। प्रभुपाद ने ही पूरी दुनिया में इस्कॉन की स्थापना किया था। इसकी शुरुआत अमेरिका से हुई थी। शनिवार 5 सितंबर को दोपहर बाद 20 हजार से अधिक श्रद्धालुओं के लिए महाप्रसाद की व्यवस्था की गई है।

बिहार- 16 जिलों में बाढ़, 5 लाख लोग प्रभावित

पटना। बिहार के 16 जिलों में बाढ़ से करीब 5 लाख लोग प्रभावित हैं। गंगा समेत 8 प्रमुख नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। पटना में गंगा का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। आपदा प्रबंधन विभाग के मुताबिक, पटना के गांधी घाट और हाथीदह में गंगा का जलस्तर अब तक के हाइएस्ट फ्लड लेवल को पार कर सकता है। मुंगेर जिले में महाने नदी पर बरसंडा में बना डायवर्सन नदी के तेज दबाव और बहाव में बह गया। बांका में हल्की बारिश में ओढ़नी डैम की सड़क धंस गई। पटना के फतुहा में श्मशान घाट डूब गए हैं, जिससे लोग सड़क किनारे अंतिम संस्कार करने को मजबूर हैं।

बेगूसराय के शाम्हो-सूर्यगढ़ा सड़क पर पानी आ जाने के कारण सड़क से संपर्क टूट गया है। खगड़िया में गुरुवार को बाढ़ के पानी में डूबने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। भागलपुर के नवगछिया अनुमंडल के राघोपुर इलाके में गंगा उफनाई हुई है।

इधर, बाढ़ के बीच मौसम विभाग ने पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीवान, सारण और गोपालगंज में तेज बारिश की संभावना जताई है। पटना समेत बाकी जिलों में मौसम सामान्य रहेगा। लोगों को उमस भरी गर्मी का सामना करना पड़ सकता है।

मालदा डिविजन के न्यू फरक्का में जमीन धंसने से हावड़ा-कटिहार समेत 14 ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं।

पटना में गंगा का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। गांधी घाट पर शुक्रवार को गंगा का जलस्तर 50.34 मीटर दर्ज किया गया।

भीड़ ने आदिवासी महिला के मुंडवाए बाल, लाठियों से पीटा, पति गिरफ्तार

उदयपुर, एजेंसी

राजस्थान के आदिवासी जिला बांसवाड़ा में महिलाओं की भीड़ ने एक आदिवासी महिला के साथ अमानवीय व्यवहार करने का मामला सामने आया है। आरोप है कि भीड़ ने महिला के सिर के बाल मुंडवा दिए, उसके कपड़े फाड़ दिए और उसे घेरकर लाठियों से बेरहमी से पीटा।

घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद मामला पुलिस तक पहुंचा। पुलिस के अनुसार, घटना में शामिल महिला और पुरुष पीड़िता के ससुराल पक्ष से जुड़े बताए जा रहे हैं। महिला कुछ दिन पहले अपने पीहर गई थी और वापस ससुराल नहीं लौटी थी। इसके बाद जब वह लौटी तो ससुराल पक्ष ने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया। पुलिस ने पीड़िता का मेडिकल कराया है। मामले में मुख्य आरोपी बताए जा रहे पीड़िता के पति को हिरासत में लिया गया है, जबकि अन्य आरोपियों की तलाश जारी है।

घटना के दौरान कुछ लोग वीडियो बनाते भी नजर आए। राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष रेहाना रियाज ने घटना की निंदा करते हुए दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

भारत लाया जाएगा भगोड़ा हीरा कारोबारी मेहुल चोकसी, बेल्जियम सरकार ने दिए पॉजिटिव संकेत

नई दिल्ली, एजेंसी

पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) घोटाले के आरोपी भगोड़े हीरा कारोबारी मेहुल चोकसी को भारत लाने की कोशिशों को लेकर बड़ी खबर सामने आई है। भारत-बेल्जियम की उच्चस्तरीय बातचीत में चोकसी के प्रत्यर्पण का मुद्दा प्रमुखता से उठाया गया। सूत्रों के मुताबिक, बेल्जियम ने इस मामले में सकारात्मक रुख के संकेत दिए हैं। हालांकि, इसका मतलब तत्काल प्रत्यर्पण नहीं है। चोकसी को भारत भेजने से पहले बेल्जियम की कानूनी प्रक्रिया और अदालतों की जांच से गुजरना होगा।

भारत ने वार्ता के दौरान स्पष्ट किया कि चोकसी की वापसी और उसके खिलाफ मुकदमा चलाना सरकार की प्राथमिकता है। चोकसी का मामला कई देशों की कानूनी और राजनयिक प्रक्रियाओं से जुड़ा होने के कारण लंबे समय से पेचीदा बना हुआ है। भारतीय एजेंसियां उसकी संपत्तियों और अन्य मामलों में भी अंतरराष्ट्रीय सहयोग ले रही हैं। चोकसी जनवरी 2018 में पीएनबी घोटाला सामने आने से पहले भारत से फरार हो गया था। बाद में उसने एंटीगुआ और बारबुडा की नागरिकता हासिल की। वर्ष 2021 में डोमिनिका में मिलने के बाद भी उसके प्रत्यर्पण को लेकर कानूनी विवाद चला। अप्रैल 2025 में बेल्जियम के एंटवर्प में उसकी गिरफ्तारी हुई थी।

पीएनबी घोटाले से जुड़ा है मेहुल

मेहुल चोकसी पर पंजाब नेशनल बैंक से जुड़े करोड़ों रुपये के धोखाधड़ी मामले में आरोप हैं। घोटाला सामने आने से पहले जनवरी 2018 में वह भारत से भाग गया था। इसके बाद उसने एंटीगुआ और बारबुडा की नागरिकता ले ली। वर्ष 2021 में डोमिनिका में मिलने के बाद उसके प्रत्यर्पण को लेकर नया विवाद खड़ा हुआ। अप्रैल 2025 में बेल्जियम के एंटवर्प में उसकी गिरफ्तारी हुई थी।

मामले में उसका भतीजा नीरव मोदी भी आरोपी है।

कार्रवाई

वन विभाग ने कश्मीर की हसीन वादियों को कचरे से बचाने कसी कमर

गुलमर्ग में अब 'पॉलीथीन नो एंट्री', गाड़ियों की होगी सख्त तलाशी

श्रीनगर, एजेंसी

कश्मीर की मशहूर पर्यटन नगरी गुलमर्ग को प्लास्टिक और बढ़ते प्रदूषण से बचाने के लिए जम्मू-कश्मीर वन विभाग ने सख्त कदम उठाने की तैयारी की है। गुलमर्ग-टंगमर्ग रोड पर जल्द एंटी-पॉलीथीन चेकपॉइंट बनाया जाएगा। यहां गुलमर्ग जाने वाले वाहनों की तलाशी लेकर पॉलीथीन और प्रतिबंधित प्लास्टिक को अंदर जाने से रोका जाएगा।

टंगमर्ग के डीएफओ फीरोज अहमद के मुताबिक, गुलमर्ग के नाजुक इकोसिस्टम पर पर्यटकों की बढ़ती आवाजाही का दबाव पड़ रहा है। जंगलों में जगह-जगह कचरा फेंके जाने के अलावा कई होटल और निजी आवास अपना गंदा पानी जंगल की जमीन में छोड़ रहे हैं। इससे देवदार के पेड़ों की जड़ें कमजोर होकर सड़ने लगी हैं।

विभाग ने टंगमर्ग से गुलमर्ग तक पिकनिक और पर्यटकों के ठहरने वाले स्थानों पर पर्याप्त संख्या में डस्टबिन लगाने की योजना बनाई है। साथ ही स्थानीय म्युनिसिपल कमेटी से होटलों के कचरा निस्तारण और नियमों के पालन पर सख्ती करने को कहा गया है। गुलमर्ग में फिलहाल समर्पित डंपिंग साइट नहीं होने से समस्या और बढ़ रही है। वनकर्मी जंगल से कचरा उठाकर कुंजर की डंपिंग साइट तक पहुंचाते हैं।

हर वाहन की होगी जांच

गुलमर्ग को प्लास्टिक प्रदूषण से बचाने के लिए वन विभाग टंगमर्ग रोड पर एंटी-पॉलीथीन चेकपॉइंट स्थापित करेगा। यहां आने-जाने वाले वाहनों की जांच की जाएगी। अधिकारियों का उद्देश्य पॉलीथीन और प्रतिबंधित प्लास्टिक को गुलमर्ग में प्रवेश करने से रोकना है। विभाग ने पर्यटकों से अपील की है कि वे जंगल और पर्यटन स्थलों पर कचरा न फैलाएं। टंगमर्ग से गुलमर्ग के बीच उन स्थानों पर भी डस्टबिन लगाए जाएंगे, जहां पर्यटक अक्सर रुककर पिकनिक मनाते हैं। विभाग का मानना है कि प्रशासनिक कार्रवाई के साथ पर्यटकों की जिम्मेदारी भी जरूरी है, तभी गुलमर्ग की प्राकृतिक सुंदरता और पर्यावरण को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकेगा।

गंदा पानी भी बना खतरा

वन विभाग के मुताबिक गुलमर्ग में पर्यावरणीय नुकसान का कारण केवल प्लास्टिक कचरा नहीं है। कई होटल और निजी आवास अपना गंदा पानी सीधे जंगल की जमीन में छोड़ रहे हैं। इससे देवदार के पेड़ों की जड़ें कमजोर हो रही हैं और उनके सड़ने का खतरा बढ़ गया है। विभाग ने स्थानीय म्युनिसिपल कमेटी से होटलों के कचरा और गंदे पानी के निस्तारण पर सख्ती बरतने को कहा है। अधिकारियों के अनुसार, सभी होटल संचालकों को तय नियमों का पालन करना होगा। गुलमर्ग में समर्पित डंपिंग साइट का अभाव भी बड़ी चुनौती है। फिलहाल वनकर्मी जंगल से कचरा उठाकर कुंजर पहुंचाते हैं।

शनाका के रिकॉर्ड शतक से पैट्रियट्स ने 137 रन की जबरदस्त जीत दर्ज की

एजेंसी नई दिल्ली

दासुन शनाका (नाबाद 121) की रिकॉर्ड शतकीय पारी और जेरेमिया लुईस (पांच विकेट) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत सेंट किट्स एंड नेविस पैट्रियट्स ने बैसेटेरे में सेंट लूसिया किंग्स के खिलाफ 137 रनों की जबरदस्त जीत हासिल की।

दासुन शनाका की रिकॉर्ड-तोड़ शतक के दम पर चार विकेट पर 235 रन बनाने के बाद, पैट्रियट्स ने जेरेमिया लुईस के पांच विकेटों की मदद से विपक्षी टीम को मात्र 98 रनों पर समेट कर मुकाबला अपने नाम किया।

पहले बैटिंग करते हुए पैट्रियट्स की शुरुआत धीमी रही। उन्होंने पहले तीन ओवरों में मात्र 10 रन बनाए और काइल मेयर्स का विकेट भी गंवा दिया। तीसरे ओवर में खेल की रफ़्तार बदली, जब मैथ्यू फोर्ड ने एक छक्का, एक चौका और पांच वाइड गेंदें दीं। इसके बाद आंद्रे फ्लेचर ने अगले ओवर में महेश थीक्षाना के खिलाफ 19 रन बनाए और छठे ओवर में तीन और बाउंड्री लगाईं, जिससे पावरप्ले के आखिर तक पैट्रियट्स का स्कोर एक विकेट पर 59 रन हो गया। सातवें ओवर में फ्लेचर का कैच छूटा और उन्होंने तुरंत ही मात्र 23 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा कर लिया। रोस्टन चेज ने 10वें ओवर में जॉनसन चार्ल्स को आउट करके फ्लेचर और चार्ल्स के बीच 81 रनों की साझेदारी तोड़ी, लेकिन असली तबाही तो अभी बाकी थी। शनाका ने जोशुआ बिशप के खिलाफ़ दो चौके जड़कर अपना आक्रामक खेल शुरू किया और फिर चेज के खिलाफ दो छक्के लगाए। किंग्स ने दो ओवरों के अंदर फ्लेचर और जेसन होल्डर को आउट कर दिया, लेकिन शनाका के ज़बरदस्त खेल के कारण उन्हें कोई राहत नहीं मिली। उन्होंने मात्र 24 गेंदों में अर्धशतक पूरा किया और फिर मात्र 39 गेंदों में अपने शतक तक पहुंचे – जो सीपीएल का सबसे तेज शतक था। उन्होंने आखिरी ओवर में चार छक्के और एक चौका लगाया, जिससे पैट्रियट्स का स्कोर 4 विकेट पर 235 रन तक पहुंच गया। किंग्स की पारी कभी ठीक से शुरू ही नहीं हो पाई। पहले ही ओवर में कामिल पूरन का विकेट गंवाने के बाद, उन्होंने पावरप्ले के दौरान जॉन कैंपबेल और चरित असलंका को भी खो दिया, जिससे इस चरण में उनका स्कोर 3 विकेट पर 46 रन ही रहा। अगले ओवर में वानिंदु हसरंगा ने ओबस पीनार को आउट किया और फिर जेरेमिया लुईस का जलवा देखने को मिला। 10वें ओवर में गेंदबाजी करने आए लुईस ने आते ही कमाल कर दिया और लगातार गेंदों पर चेस और फोर्ड को आउट किया। इसके बाद, अकेले संघर्ष कर रहे टिम सीफर्ट को अगले ओवर में एशमीड नेड ने आउट कर दिया।

लुईस ने वापसी करते हुए जोशुआ बिशप का विकेट लिया और फिर 14वें ओवर में थीक्षणा और अमारी गुडरिज को आउट करके पारी का समापन किया। किंग्स की टीम सिर्फ 98 रनों पर सिमट गई और केवल तीन बल्लेबाज ही दहाई का आंकड़ा छू सके।

संक्षिप्त स्कोर इस प्रकार रहाः- सेंट किट्स एंड नेविस पैट्रियट्स ने 20 ओवर में 4 विकेट पर 235 रन (दसुन शनाका नाबाद 121, आंद्रे फ्लेचर 64; मैथ्यू फोर्ड 2-48)। सेंट लूसिया किंग्स 13.5 ओवर में 98 रनों पर ऑल-आउट (टिम सीफर्ट 50; जेरेमिया लुईस 5-10)।

सहवाग और द्रविड़ के बेटों के साथ मिली थी अंडर-19 टीम में जगह, BCCI ने रोहित को दो साल के लिए बैन कर दिया

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय अंडर-19 टीम के खिलाड़ी रोहित यादव को बीसीसीआई ने दो साल के लिए बैन कर दिया है। उन्होंने यह बैन उम्र में फर्जीवाड़ा करने के लिए लगाया गया है। रोहित ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ इसी महीने होने वाली अंडर-19 वनडे और मल्टी-डे मैच की सीरीज के लिए चुने गए थे। उम्र को लेकर यह गड़बड़ी क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल की प्री-सीजन डॉक्यूमेंट जांच के दौरान सामने आई। इसके बाद रोहित को भारत की अंडर-19 टीम से बाहर कर दिया गया है।

लेग स्पिनर रोहित यादव ने बंगाल के लिए एज-ग्रुप क्रिकेट में हिस्सा लिया है। कैब के मुताबिक, उनके दस्तावेजों में 27 महीने की उम्र का अंतर पाया गया। इसके बाद बीसीसीआई से जुड़े सभी राज्य क्रिकेट संघों को उनके बैन की जानकारी दे दी गई है। यह बैन तुरंत प्रभाव से लागू हो गया है। रोहित यादव ने श्रीलंका दौरे पर जुलाई में भारत की अंडर-19 टीम के लिए एक यूथ टेस्ट और दो वनडे खेले थे। इसमें उन्होंने 7 विकेट लिए थे।

क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल ने 64 अन्य खिलाड़ियों पर भी बैन लगाया है। इनमें अंडर-19 विश्व कप विजेता टीम का हिस्सा रहे रवि कुमार का नाम भी शामिल है। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज रवि कुमार ने 2022 अंडर-19 विश्व कप के फाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ शानदार प्रदर्शन किया था। रवि कुमार ने अंडर-19 विश्व कप 6 मैच खेले थे और 10 विकेट लिए थे। वह सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में भारतीय गेंदबाजों में दूसरे नंबर पर थे। फाइनल में रवि ने इंग्लैंड के खिलाफ 9 ओवर में 34 रन देकर 4 विकेट चटकाए थे। 2022 में ही उन्होंने बंगाल के लिए डेब्यू किया था, लेकिन 2023 के बाद वह कोई मैच नहीं खेल पाए हैं। रवि कुमार के मामले में उम्र का अंतर 40 महीने से ज्यादा बताया जा रहा है। उनकी अंडर-19 क्रिकेट में डेब्यू से लेकर 2025-26 सीजन तक की सभी रिकॉर्डिंग को अमान्य माने जाएंगे।

जसप्रीत बुमराह रणजी ट्रॉफी का मैच खेल सकते हैं, बीसीसीआई ने अफगानिस्तान सीरीज के लिए बैकअप भी तैयार किया

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम में चुना गया है। इंग्लैंड दौरे पर बुमराह चोटिल हो गए थे। अभी तक उन्होंने फिटनेस टेस्ट पास नहीं किया है। 13 सितंबर से भारत और अफगानिस्तान के बीच तीन मैचों की टी20 सीरीज शुरू होगी। इसके बाद भारतीय टीम को एशियन गेम्स में भी खेलना है। बुमराह के अलावा नीतीश कुमार रेड्डी, वॉशिंगटन सुंदर और हर्षित राणा को भी फिटनेस टेस्ट पास करना है। सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की मेडिकल टीम ने पिछले सप्ताह चयनकर्ताओं को रिपोर्ट सौंपी थी। रिपोर्ट में इन चारों खिलाड़ियों को फिट बताया गया था, लेकिन मैच फिटनेस परखने के लिए उन्हें प्रैक्टिस मैचों में उतारना जरूरी है। सूत्र ने बताया, 'बीसीसीआई की मेडिकल टीम ने पिछले हफ्ते सेलेक्टरों को एक रिपोर्ट सौंपी थी, जिसमें कहा गया था कि ये चारों खिलाड़ी मेडिकल तौर पर तो फिट हैं, लेकिन प्रैक्टिस मैचों में उनका आकलन किया जाना जरूरी है। सीओई ने 4 से 9 सितंबर के बीच ये मैच तय किए हैं। सीओई को भरोसा है कि खिलाड़ी अफगानिस्तान सीरीज के लिए फिट हो जाएंगे।' इस बीच चयनकर्ताओं ने प्रिंस यादव को जसप्रीत बुमराह के बैकअप विकल्प के रूप में देखा है। प्रिंस ने इसी साल जून में अफगानिस्तान के खिलाफ घरेलू वनडे सीरीज से अपना डेब्यू किया था। जुलाई में वेस्टइंडीज दौरे पर टी20 मैच के दौरान उन्हें हैमस्ट्रिंग चोट लग गई थी। अब वह पूरी तरह फिट हो चुके हैं और चयन के लिए भी उपलब्ध हैं। चयनकर्ता और टीम मैनेजमेंट चाहती हैं कि जसप्रीत बुमराह न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज से पहले कम से कम एक फर्स्ट क्लास मैच खेलें। बुमराह ने पिछले साल नवंबर में गुवाहाटी में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे टेस्ट के बाद से कोई रेड-बॉल मैच नहीं खेला है। नवंबर में भारतीय टीम को दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए न्यूजीलैंड का दौरा करना है। सूत्र ने कहा- फिटनेस की वजह से जसप्रीत बुमराह को कई मैच छोड़ने पड़े हैं। न्यूजीलैंड में टेस्ट मैच खेलने से पहले यह पक्का करना होगा कि उनका घुटना फर्स्ट क्लास मैच का बोझ झेल सकता है या नहीं। यह देखना होगा कि क्या वह रणजी ट्रॉफी का मैच खेलते हैं या न्यूजीलैंड में इंडिया ए के लिए फर्स्ट क्लास मैच खेलते हैं। अक्टूबर में वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए उन्हें आराम दिए जाने की संभावना है। लेकिन न्यूजीलैंड में ए टीम के मैच वहां होने वाली वनडे सीरीज के समय के साथ टकरा रहे हैं।

वर्ल्ड चैंपियन खिलाड़ी ने 31 साल की उम्र में लिया संन्यास, इंटरनेशनल फुटबॉल को अचानक अलविदा कहा

एजेंसी नई दिल्ली

स्पेन ने 2026 फीफा विश्व कप का खिताब जीता था। 19 जुलाई को न्यू जर्सी के मेटलाइफ स्टेडियम में फाइनल मुकाबला हुआ था। स्पेन ने अर्जेंटीना को हराकर दूसरी बार खिताब अपने नाम किया। स्पेन की टीम का हिस्सा रहे 31 साल के मार्कोस लोरेंते ने संन्यास का ऐलान कर दिया है। सोशल मीडिया पर पोस्ट डालकर लोरेंते ने जानकारी दी कि वह अब इंटरनेशनल फुटबॉल में नहीं खेलेंगे।

मार्कोस लोरेंते मिडफील्डर के साथ ही डिफेंडर के रूप में भी खेलते हैं। वह स्पेन के ही फुटबॉल क्लब एथलेटिको मैड्रिड का हिस्सा हैं। वह रियल मैड्रिड के लिए भी खेल चुके हैं। 2020 में लोरेंटो ने स्पेन के लिए अपना इंटरनेशनल डेब्यू किया था। फीफा विश्व कप 2026 में उन्हें तीन मैच खेलने का मौका मिला, इसमें सेमीफाइनल भी शामिल था। उरुग्वे के खिलाफ उन्होंने एक गोल भी असिस्ट किया था। 27 मैचों के इंटरनेशनल करियर में वह कोई गोल नहीं कर पाए।

फीफा विश्व कप की ट्रॉफी के साथ मार्कोस लोरेंते ने इंस्टाग्राम के रिटायरमेंट पोस्ट में लिखा, 'बहुत सोचने के बाद, मैंने नेशनल टीम के साथ अपना समय खत्म करने का फैसला किया है। मुझे पता है कि मैं अभी भी यंग हू और शायद अगर मैं अच्छा करता रहा, तो मेरे पास इस शर्ट में खेलने के लिए अभी भी कई साल होंगे। चाहे मैं वर्ल्ड कप में खेलता या नहीं या हम इसे जीतते या नहीं, मैंने यह फैसला पहले ही कर लिया था।'

उन्होंने आगे लिखा- मुझे पता है कि आप में से कई लोग इसे समझ नहीं पाएंगे और सच कहूं तो, बाहर से देखने पर मैं भी शायद इसे न समझ पाता। लेकिन यह मेरा निजी फैसला है, जिस पर मैंने बहुत सोच-समझकर और पूरे दिल से विचार किया है।

व्यापार

दुनिया ढूंढ रही नया सप्लायर, भारत पर भरोसा, 14166000000 का बाजार कब्जाने का मौका

एजेंसी नई दिल्ली

भारत 1.5 अरब डॉलर (करीब 14,166 करोड़ रुपये) से ज्यादा के गेहूं निर्यात का मौका पा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक्सपोर्ट धीरे-धीरे फिर से शुरू हो रहा है। साथ ही घरेलू उत्पादन भी मजबूत है। स्टॉक भी पर्याप्त है। दुनिया के बड़े खरीदार अपने सोर्स में विविधता लाने की कोशिश कर रहे हैं। एसोचैम की रिपोर्ट में यह बात कही गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में गेहूं की रिकॉर्ड पैदावार और सरप्लस स्टॉक ने घरेलू खाद्य सुरक्षा की जरूरतों को पूरा करते हुए निर्यात बढ़ाने का मौका दिया है। एसोचैम ने कहा, 'भारत हाल के सालों में ग्लोबल गेहूं व्यापार के सबसे अच्छे दौर में से एक में प्रवेश कर रहा है।' उसने लगभग चार साल तक लगी पाबंदियों के बाद 2026 में निर्यात के धीरे-धीरे फिर से शुरू होने की ओर इशारा किया। सरकार ने गेहूं की कुछ खास किस्मों, गेहूं के आटे और उससे जुड़े उत्पादों के लिए एक्सपोर्ट पॉलिसी को 'प्रतिबंधित' श्रेणी से हटाकर 'मुक्त' कैटेगरी में कर दिया है। इसमें गेहूं, ड्यूरम गेहूं, आटा, मैदा और सूजी/रवा शामिल हैं।

भारत ने 2025-26 में रिकॉर्ड 12.07 करोड़ टन गेहूं का उत्पादन किया। इससे उसने दुनिया के दूसरे सबसे बड़े गेहूं उत्पादक के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखी। 28 मई 2026 तक सेंट्रल पूल में गेहूं का स्टॉक 5.13 करोड़ टन था। जबकि 1 जुलाई के लिए तय बफर मानक 2.75 करोड़ था।

भारत का मौजूदा एक्सपोर्ट वॉल्यूम उसके उत्पादन से मिलने वाले सरप्लस की तुलना में कम है। इससे आने वाले वर्षों में गेहूं का निर्यात बढ़ाने की काफी गुंजाइश है। ग्लोबल मार्केट में भारत को कीमत का भी फायदा है। वित्त वर्ष 2026-27 के लिए भारत के गेहूं का MSP लगभग 268 डॉलर प्रति टन था। मई 2026 में अंतरराष्ट्रीय बाजार में गेहूं की कीमत लगभग 303 डॉलर प्रति टन थी। इससे प्रति टन लगभग 35 डॉलर का अंतर पैदा हुआ। रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश भारतीय गेहूं के लिए सबसे अच्छा मौका देता है। वहीं मिस्र, इंडोनेशिया, अल्जीरिया, मोरक्को और फिलीपींस में धीरे-धीरे विस्तार की गुंजाइश हो सकती है। बांग्लादेश ने 2024-25 में लगभग 67 लाख टन गेहूं का आयात किया। भारत पहले से ही उसके प्रमुख सप्लायर में से एक है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2025-26 में गेहूं का उत्पादन रिकॉर्ड 84.38 करोड़ टन था। यह 2026-27 में घटकर लगभग 81.9 करोड़ टन होने का अनुमान है। इसकी एक वजह गेहूं एक्सपोर्ट करने वाले प्रमुख देशों में मौसम से जुड़ी चुनौतियां हैं। साथ ही, गेहूं इम्पोर्ट करने वाले प्रमुख देश अब ज्यादा अलग-अलग और भरोसेमंद सप्लायर्स की तलाश कर रहे हैं। इससे भारत के लिए ग्लोबल मार्केट में अपनी स्थिति मजबूत करने का मौका बन रहा है। लंबे समय तक सफलता पाने के लिए ये जरूरी हालांकि, रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि लंबे समय तक सफलता पाने के लिए लगातार अच्छी क्वालिटी, बेहतर लॉजिस्टिक्स, स्टोरेज और टेस्टिंग की बेहतर सुविधाएं और एक्सपोर्ट पॉलिसी में ज्यादा स्पष्टता जरूरी होगी। रिपोर्ट में कहा गया है, 'एक्सपोर्ट के मामले में धीरे-धीरे और अनुमान के मुताबिक आगे बढ़ने के साथ स्टोरेज, ट्रांसपोर्ट और पोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास में निवेश करके भारत गेहूं का एक ज्यादा भरोसेमंद ग्लोबल सप्लायर बन सकता है।'

नितिन गडकरी उठाने वाले हैं बड़ा कदम, 5000 वाले इस डिवाइस पर लगाया बड़ा दांव

एजेंसी नई दिल्ली

प्रदूषण की बढ़ती समस्या से निपटने के लिए सरकार गंभीर है। वह अब IIT दिल्ली के एक नए इनोवेशन की मदद से इसे थामने के बारे में विचार कर रही है। यह गाड़ियों से निकलने वाले धुएं को कम करने में मददगार साबित हो सकता है। सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने इस कदम की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि यह पुरानी भारी गाड़ियों को स्क्रैप करने और बदलने के सरकार के मौजूदा प्रोग्राम में मदद करेगा। सरकार पुराने और ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाले ट्रकों और बसों में रेट्रोफिट एमिशन-कंट्रोल डिवाइस (RECDs) लगाने की इजाजत देने की तैयारी में है। ये डिवाइस पार्टिकुलेट मैटर (PM) के उत्सर्जन को 90% तक कर सकते हैं। इसी तरह इनकी मदद से नाइट्रोजन ऑक्साइड के उत्सर्जन को 60% तक कम किया जा सकता है। सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (SIAM) के एक कार्यक्रम में गडकरी ने कहा कि IIT-दिल्ली के एक इनोवेशन से विकसित इस टेक्नोलॉजी का टेस्ट सफल रहा है। इन डिवाइस को BS-IV, BS-III और उससे पुरानी डीजल गाड़ियों में लगाया जा सकता है। इससे उनका उत्सर्जन BS-VI गाड़ियों के बराबर हो जाएगा। प्रदूषण को कम करने के लिए डीजल जनरेटर सेट में पहले से ही ऐसी एमिशन-कंट्रोल टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जा रहा है। गडकरी ने कहा कि रेट्रोफिट डिवाइस की कीमत लगभग 4,000-5,000 रुपये होने की उम्मीद है। हिस्से के तौर पर ऑटोमोटिव इंडस्ट्री स्टैंडर्ड 228 को नोटिफाई करने की तैयारी कर रहा है। यह स्टैंडर्ड उन टेक्निकल स्पेसिफिकेशन्स और परफॉर्मेंस की जरूरतों को तय करेगा जिन्हें एमिशन-कंट्रोल डिवाइस को पूरा करना होगा। गडकरी ने भारत में बसों की कमी की ओर भी ध्यान दिलाया। देश में हर 1,000 लोगों पर सिर्फ दो बसें हैं। जबकि ग्लोबल बेंचमार्क आठ बसों का है। उन्होंने टियर-II, टियर-III और छोटे शहरों में नए तरह के पब्लिक ट्रांसपोर्ट मॉडल लाने की बात कही। उन्होंने बताया कि मेट्रो रेल सिस्टम में इतनी ज्यादा लागत आती है कि वे इन जगहों के लिए प्रैक्टिकल नहीं हो सकते। नौकरशाही की रुकावटों के बारे में बात करते हुए गडकरी ने नागपुर में प्रस्तावित फ्लैश-चार्जिंग आर्टिकुलेटेड बस सिस्टम का जिक्र किया। उन्होंने कहा, 'IAS अधिकारियों को लगता है कि देश में सिर्फ वे ही समझदार लोग हैं। राजनेताओं को शायद सिर्फ चुनाव जीतना आता हो, लेकिन उन्हें लगता है कि सिर्फ उन्हीं के पास ज्ञान है। वे रुकावटें पैदा करते रहते हैं। लेकिन, उन्हें दूर करना मेरी जिम्मेदारी है।' गडकरी ने बार-बार नियम तोड़ने वालों से निपटने के लिए ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन पर 'नेगेटिव पॉइंट्स सिस्टम' शुरू करने की अपनी मिनिस्ट्री की योजना को भी दोहराया। उन्होंने बुधवार को 'सुरक्षा' पायलट प्रोग्राम लॉन्च करते हुए इस प्रस्ताव की घोषणा की। इस प्रोग्राम का मकसद हाईवे और माइनिंग प्रोजेक्ट्स में लगे 10 लाख ड्राइवरों, कंस्ट्रक्शन वर्कर्स और दूसरे ज्यादा जोखिम वाले काम करने वालों को मौके पर ही मेडिकल जांच और काउंसलिंग देना है।

'पीएम मोदी ने हमें चेतावनी दी थी', यूरोप को हुआ भूल का एहसास, ट्रेड पर चीन की चाल से अब खुली आंखें

एजेंसी नई दिल्ली

बेल्जियम के प्रधानमंत्री बार्ट डी वेवर ने इशारों में चीन पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि व्यापार के लिए दूसरों पर निर्भर रहने के खतरों को लेकर यूरोप की आंखें अब खुली हैं। वेवर ने माना कि भारत ने यूरोपीय देशों को इस मुद्दे पर पहले ही चेतावनी दी थी। लेकिन, उस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया गया।बार्ट डी वेवर ने भारत और यूरोप के बीच गहरी रणनीतिक साझेदारी की संभावनाओं पर बात की। उन्होंने कहा कि दोनों पक्षों के सामने एक जैसी चुनौतियां हैं। खासकर इसलिए क्योंकि आर्थिक निर्भरता का इस्तेमाल अब दबाव बनाने के लिए किया जा रहा है। उन्होंने कहा, 'हम एक जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हमारा सामना ऐसे पावर ब्लॉक्स से है जो एक खास दिशा में बढ़ रहे हैं। एक ऐसी दिशा जो शायद हमें पसंद नहीं है। हमें अपनी मर्जी के खिलाफ काम करने के लिए मजबूर किया जाना भी पसंद नहीं है। हमें यह पसंद नहीं है कि निर्भरता का इस्तेमाल हमारे खिलाफ हथियार के तौर पर किया जाए।' इसके बाद बेल्जियम के प्रधानमंत्री ने यूरोप को दी गई भारत की पुरानी चेतावनियों का जिक्र किया। डी वेवर ने कहा, 'आपने यह इतिहास देखा है। आपके प्रधानमंत्री (नरेंद्र मोदी) ने बहुत पहले ही यूरोप को इस बारे में चेतावनी दी थी। लेकिन, उन्हें नजरअंदाज कर दिया गया। उनकी बात नहीं सुनी गई। अब हम सुन रहे हैं। हो सकता है कि यूरोप में यह एहसास थोड़ी देर से हुआ हो। लेकिन, अब ऐसा हो रहा है।' वह एक सवाल का जवाब दे रहे थे कि ऐसे समय में जब ग्लोबल इकॉनमी बंट रही है, यूरोप और भारत एक मजबूत रणनीतिक साझेदारी कैसे बना सकते हैं। भारत को व्यापार, निवेश, टेक्नोलॉजी और सप्लाई-चेन की मजबूती के लिए यूरोप को लंबे समय के पार्टनर के तौर पर क्यों चुनना चाहिए। डी वेवर ने कहा कि यूरोप अब सक्रिय रूप से ऐसे पार्टनर की तलाश कर रहा है जो 'मल्टीलेटरलिज्म' यानी बहुपक्षवाद और 'सम्मान, न कि जबरदस्ती' पर आधारित सहयोग में विश्वास रखते हों। उन्होंने कहा, 'दुनिया की किस बड़ी अर्थव्यवस्था के साथ हम इस तरह का रिश्ता बना सकते हैं? अगर उस लिस्ट में भारत का नाम नहीं है तो आपने कोई बहुत बुनियादी बात मिस कर दी है।

'द ट्रेटर्स 2' की जीत पर क्रिस्टल डिसूज़ा ने खोला राज, बोलीं- 'ज्यादा सफाई देती तो पकड़ी जाती'

'द ट्रेटर्स सीजन 2' में क्रिस्टल डिसूज़ा और रिदा थराना ने अपने खेल से सभी को चौंका दिया। उन्होंने शो में 'ट्रेटर्स' की भूमिका निभाते हुए न सिर्फ कई खिलाड़ियों को गलतफहमी में रखा, बल्कि आखिर तक खुद को बचाए रखा और विजेता बनकर बाहर निकलीं। अब शो के खत्म होने के बाद क्रिस्टल ने बताया है कि शुरुआत से ही उन्हें पता था कि अगर वह किसी सवाल पर जरूरत से ज्यादा सफाई देंगी या खुद को बचाने के लिए बहुत ज्यादा सफाई देने लगेंगी, तो उनका राज खुल सकता है। 'ट्रेटर' होना सुनने में भले ही बहुत शानदार लगता हो, लेकिन जब आपको हर दिन उन लोगों से झूठ बोलना पड़े, जिन्हें आप सच में पसंद करते हैं, तब इसकी असली मुश्किल समझ आती है। मैं शुरुआत से ही ट्रेटर थीं और इसलिए मुझे जल्दी समझ आ गया था कि ज्यादा बोलना या किसी आरोप पर तुरंत सफाई देना मुझे सबकी नजरों में ला सकता है।

'द ट्रेटर्स सीजन 2' में क्रिस्टल डिसूजा और रिदा थराना ने अपने खेल से सभी को चौंका दिया। उन्होंने शो में 'ट्रेटर्स' की भूमिका निभाते हुए न सिर्फ कई खिलाड़ियों को गलतफहमी में रखा, बल्कि आखिर तक खुद को बचाए रखा और विजेता बनकर बाहर निकलीं। अब शो के खत्म होने के बाद क्रिस्टल ने बताया है कि शुरुआत से ही उन्हें पता था कि अगर वह किसी सवाल पर जरूरत से ज्यादा सफाई देंगी या खुद को बचाने के लिए बहुत ज्यादा सफाई देने लगेंगी, तो उनका राज खुल सकता है। क्रिस्टल ने अपने अनुभव के बारे में बात करते हुए कहा, '''ट्रेटर' होना सुनने में भले ही बहुत शानदार लगता हो, लेकिन जब आपको हर दिन उन लोगों से झूठ बोलना पड़े, जिन्हें आप सच में पसंद करते हैं, तब इसकी असली मुश्किल समझ आती है। मैं शुरुआत से ही ट्रेटर थीं और इसलिए मुझे जल्दी समझ आ गया था कि ज्यादा बोलना या किसी आरोप पर तुरंत सफाई देना मुझे सबकी नजरों में ला सकता है। 'क्रिस्टल के कहा, ''इसी वजह से मैंने यह सीखने की कोशिश की कि कब बोलना है, कब चुप रहना है और कब सिर्फ मुस्कुराकर पीछे बैठ जाना है। शो के दौरान मुझ पर शक भी हुआ, आरोप भी लगे और कई बार दूसरे कंटेस्टेंट्स ने मुझे मुश्किल में डालने की कोशिश भी की, लेकिन मैं किसी तरह हर बार मुश्किल से निकलती चली गई।'' जब शो शुरू हुआ था, तब कुल 21 प्लेयर्स पैलेस में पहुंचे थे। इसके बाद कई हफ्तों तक मर्डर, धोखे, गलत थ्योरी और एक-दूसरे पर शक का खेल चलता रहा। 'शक के घेरे' के दौरान प्लेयर्स लगातार यह पता लगाने की कोशिश करते रहे कि आखिर उनके बीच कौन ट्रेटर है। जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ा, एक-एक करके खिलाड़ी बाहर होते गए और आखिर में छह लोग बचे। फिनाले तक मल्लिका शेरावत, साहिल सलाथिया, दलीप ताहिल, शालिनी पासी, क्रिस्टल डिसूजा और रिदा थराना ही खेल में टिके रहे। इन सभी को लगा कि उन्होंने पैलेस के सबसे बड़े धोखे को पीछे छोड़ दिया है। लेकिन फिनाले में क्रिस्टल और रिदा ने खुद को ट्रेटर बताकर पूरे खेल का सबसे बड़ा राज खोल दिया। दोनों की यह जोड़ी

आखिरकार जीत तक पहुंची। रिदा थराना ने भी अपनी जीत को लेकर कहा, ''अगर किसी ने मुझे पहले दिन बताया होता कि मैं इस गेम को एक ट्रेटर के तौर पर खत्म करूंगी, तो मैं हंस पड़ती। मैं शुरुआत में इनोसेंट प्लेयर बनकर खेलना चाहती थीं, क्योंकि मुझे लगता था कि मैं झूठ नहीं बोल सकतीं। लेकिन बाद में पूरा खेल बदल गया।'' रिदा ने कहा, ''ट्रेटर बनने के बाद मेरे पास फिनाले तक पहुंचने की प्लानिंग थी, लेकिन सबसे मुश्किल हिस्सा उन लोगों के खिलाफ खेलना था, जिनकी मैं सच में परवाह करती थीं। मैंने इनोसेंट प्लेयर के तौर पर भी अपना पूरा प्रयास किया और ट्रेटर बनने के बाद भी पूरी ताकत से खेलीं। मैंने जीत का फैसला किस्मत पर छोड़ दिया। मैं पैलेस में इनोसेंट प्लेयर बनकर पहुंचीं, ट्रेटर बनीं और आखिरकार विजेता बनकर बाहर निकलीं।''

बेटियों के साथ जयपुर की गलियों में घूमीं लीजा रे, राजस्थानी थाली से कला और शॉपिंग तक का लिया मजा

अभिनेत्री लीजा रे इन दिनों जयपुर में है। वह अपनी बेटियों के साथ गुलाबी शहर की गलियों, पुरानी हवेलियों, कला, संस्कृति और शहर की पुरानी विरासत को करीब से जान रही है। उन्होंने अपनी इस यात्रा की कई तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किए। इन झलकियों में वह कभी बेटियों के साथ राजस्थानी थाली का मजा लेती दिखीं, तो कभी संकरी गलियों में टुक-टुक की सवारी का आनंद लिया। लीजा रे ने शुक्रवार को अपनी जयपुर ट्रिप की तस्वीरों और वीडियो की एक पूरी झलक साझा की। तस्वीरों में वह और उनकी दोनों बेटिया जयपुर की रंगीन गलियों और पुराने शहर की खूबसूरत इमारतों के बीच घूमती नजर आ रही हैं। शेयर की गई तस्वीरों में शहर की वास्तुकला, वहां के रंग और कलात्मक माहौल देखने को मिल रहा है। लीजा ने अपनी पोस्ट में जयपुर की खासियत को अपने नजरिए से समझाने की कोशिश की। उन्होंने लिखा, ''पहली नजर में यह शहर रंगों, बनावट और तरह-तरह के नजारों का एक खूबसूरत मेल लगता है, लेकिन असल में इसके पीछे एक लंबी कलात्मक परंपरा और सोच है। आज का जयपुर अपनी पुरानी विरासत को संभालकर रखते हुए उसे नए तरीके से सामने लाने का हुनर भी जानता है। शहर में पुराना और नया एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि साथ-साथ चलता नजर आता है।''

जन्माष्टमी पर ब्रज की गलियों में खोई निमरत कौर, बांके बिहारी के दर्शन से कृष्ण लीला तक की दिखाई झलक

निमरत कौर को पर्दे पर आपने कई अलग-अलग किरदार निभाते देखा होगा, लेकिन जन्माष्टमी के मौके पर एक्ट्रेस का एक अलग ही रंग देखने को मिला। इस बार वह कृष्ण की नगरी कहे जाने वाले ब्रज धाम की गलियों में भक्ति के रंग में डूबी नजर आईं। वृंदावन और बरसाना की अपनी यात्रा की तस्वीरें और वीडियो निमरत ने सोशल मीडिया पर साझा की, जिनमें वह कहीं भगवान बांके बिहारी के दर्शन करती दिखीं, तो कहीं ब्रज के मशहूर खानों का आनंद लेती नजर आईं। निमरत ने जन्माष्टमी के मौके पर इंस्टाग्राम पर तस्वीरों और वीडियो की एक पूरी झलक साझा की। उनकी पोस्ट में सबसे पहले श्री बांके बिहारी के दर्शन की झलक देखने को मिली। इसके अलावा, उन्होंने श्री राधा वल्लभ की इत्र सेवा का भी अनुभव लिया। ब्रज की गलियों में घूमते हुए उन्होंने वहां के खास पकवानों की झलक भी दिखाई। पोस्ट में बरसाना की ओर जाने वाले रास्ते, बरसाना में होने वाली श्री कृष्ण लीला और वहां का आध्यात्मिक माहौल भी देखने को मिला। निमरत की इस यात्रा का एक खास हिस्सा निधिवन भी रहा। उन्होंने निधिवन की झलक साझा करते हुए इसे रहस्यमयी और मंत्रमुग्ध कर देने वाली जगह बताई। इसके बाद उन्होंने यमुना के किनारे का नजारा भी दिखाया अपनी इस यात्रा को शब्दों में बयां करते हुए निमरत ने लिखा, ''ब्रज धाम की जादुई धूल से धन्य महसूस कर रही हूं। दिव्य प्रभु और स्वयं प्रेम के रूप में प्रकट इस भूमि से मंत्रमुग्ध और अभिभूत हूं। जो कुछ शब्दों में बयां करना या पूरी तरह कैमरे में कैद करना मुश्किल है, उसकी कुछ झलकियां साझा कर रही हूं।

नीति मोहन ने 'माहिया' को बताया प्यार और अपनापन बयां करने वाला गीत, बोलीं- इसमें सच्चा एहसास है

प्लेबैक सिंगर नीति मोहन अपनी सुरीली आवाज से एक बार फिर दर्शकों का दिल जीतने के लिए तैयार हैं। उनकी आवाज में रिकॉर्ड किया गया नया गीत 'माहिया' जल्द आने वाली वेब सीरीज 'द रिवॉल्यूशनरीज' में सुनाई देगा। यह गाना सीरीज की प्रेम कहानी को आगे बढ़ाते हुए उसके मुख्य किरदारों के बीच पनप रहे प्यार, अपनापन और गर्मजोशी को खूबसूरती से सामने लाता है।

प्लेबैक सिंगर नीति मोहन अपनी सुरीली आवाज से एक बार फिर दर्शकों का दिल जीतने के लिए तैयार हैं। उनकी आवाज में रिकॉर्ड किया गया नया गीत 'माहिया' जल्द आने वाली वेब सीरीज 'द रिवॉल्यूशनरीज' में सुनाई देगा। यह गाना सीरीज की प्रेम कहानी को आगे बढ़ाते हुए उसके मुख्य किरदारों के बीच पनप रहे प्यार, अपनापन और गर्मजोशी को खूबसूरती से सामने लाता है। 'माहिया' में सीरीज के मुख्य किरदार सचिंद्र नाथ सान्याल और प्रतिभा लाहिड़ी के बीच पनपते रोमांस को दिखाया गया है। सचिंद्र नाथ सान्याल का किरदार रोहित सराफ निभा रहे हैं, जबकि प्रतिभा लाहिड़ी के किरदार में प्रतिभा रांटा नजर आएंगी। गाने में दोनों के बीच बढ़ते रिश्ते और एक-दूसरे के प्रति पैदा हो रहे खास एहसास को जगह दी गई है। 'माहिया' एक लव सॉन्ग है, जो उस खुशी को बयां करता है, जब जिंदगी में कोई ऐसा शख्स आता है, जो आपके लिए सबसे ज्यादा मायने रखता है। गीत के बोल बार-बार इसी भावना को दिखाते हैं कि प्यार करने वाले के लिए उसकी मोहब्बत ही सब कुछ होती है। इस गाने को आकाशदीप सेनगुप्ता ने संगीत दिया है। इसे नीति मोहन और तुषार जोशी ने अपनी

आवाज दी है, जबकि इसके बोल टोलिया लवराज सिंह और गौरव चक्रवर्ती ने लिखे हैं। मोहन ने इस गीत को लेकर अपने अनुभव साझा किए और कहा, ''माहिया' बहुत खूबसूरत और सुकून देने वाला गीत है। मुझे इसकी धुन और बोल में छिपी भावनाएं बेहद पसंद आई। खास तौर पर यह बात अच्छी लगी कि गाने में शख्स उस महिला की यादों में खोया रहता है, जिससे वह प्यार करता है। वह महिला उसकी हर एहसास में है और गाने के जरिए वह उसे यह बताने की कोशिश करता है कि वह उसके लिए सब कुछ है।'' नीति ने आगे कहा, ''इस भावना में मुझे एक तरह की सच्चाई और सहजता महसूस होती है। प्यार का यह एहसास बिना किसी दिखावे के बहुत स्वाभाविक तरीके से सामने आता है। तुषार जोशी के साथ इस गीत को आवाज देना मेरे लिए काफी अच्छा अनुभव रहा। मुझे उम्मीद है कि श्रोता गाने की रोमांटिक धुन को पसंद करेंगे और इसे सुनते हुए जिंदगी के खूबसूरत प्यार भरे पल भी याद आएंगे।'' 'द रिवॉल्यूशनरीज' की कहानी सच्ची घटनाओं से प्रेरित है और इसमें भारत की आजादी की लड़ाई की उन कहानियों को सामने लाने की कोशिश की गई है, जिनके बारे में कम बात हुई है। यह सीरीज संजीव सान्याल की चर्चित किताब 'रिवॉल्यूशनरीज: द अदर स्टोरी ऑफ हाउ इंडिया वॉन इट्स फ्रीडम' पर आधारित है।

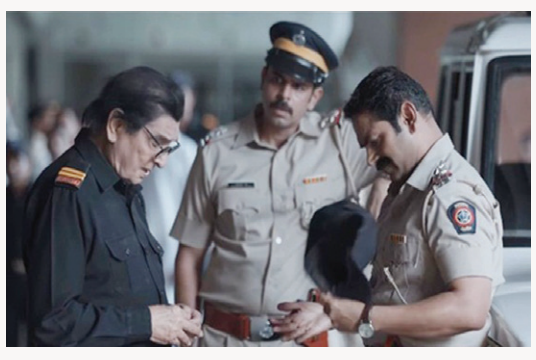

अक्षय कुमार ने शेयर की फिल्म 'हैवान' की क्लिप, असरानी को याद कर बोले- आप जैसा कोई नहीं

भारतीय फिल्म अभिनेता असरानी का निधन पिछले साल अक्टूबर में हो गया था। वह आगामी क्राइम थ्रिलर फिल्म 'हैवान' में नजर आएंगे। शुक्रवार को अभिनेता अक्षय कुमार ने असरानी के साथ स्क्रीन शेयर करने पर उनका आभार जताया। अक्षय कुमार ने इंस्टाग्राम पर फिल्म हैवान का एक छोटा-सा क्लिप शेयर किया, जिसमें असरानी अभिनय करते नजर आ रहे हैं। अक्षय कुमार ने इस पोस्ट के जरिए असरानी के आखिरी शॉट साथ में करने पर आभार जताया। उन्होंने लिखा, 'मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस महान कलाकार के साथ काम करने का मौका मिला और 'हैवान' में उनका आखिरी शॉट देखा। मिस यू असरानी जी आपके जैसा कोई नहीं हो सकता।' अभिनेता असरानी आगामी फिल्म 'हैवान' में एक बहुत बूढ़े सुरक्षा गार्ड (वॉचमैन) की एक बेहद मजेदार और दिलचस्प भूमिका में नजर आएंगे। 'हैवान' उनके निधन के बाद आने वाली आखिरी फिल्मों में से एक हैझ अक्षय कुमार और सैफ अली खान की फिल्म 'हैवान' 2016 की मलयालम सुपरहिट फिल्म 'ओप्पम' का आधिकारिक हिंदी रीमेक है, जिसे लेकर फैंस में काफी उत्सुकता देखने को मिल रही है, क्योंकि फिल्म में अक्षय कुमार और सैफ अली खान की जोड़ी एक बार फिर साथ नजर आएगी। दोनों लगभग 18 साल बाद स्क्रीन पर साथ नजर आएंगे। इससे पहले दोनों अभिनेता फिल्म 'टशन' में नजर आए थे। हैवान' एक दमदार थ्रिलर फिल्म है, जिसका निर्देशन प्रियदर्शन ने किया है। फिल्म का निर्माण कार्य केवीएन प्रोडक्शंस और द स्पियन फिल्म्स साथ मिलकर कर रहे हैं। वहीं, वेंकेट के. नारायण और शैलजा देसाई इसे मिलकर प्रोड्यूस कर रहे हैं। फल्म में अक्षय कुमार और सैफ अली खान के अलावा फिल्म में श्रिया पिलगांवकर और सैयामी खेर भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगी।

गोपालदास मंदिर में भव्य भजन संध्या, भक्तिरस में डूबा मंदिर परिसर

सीधी विधायक रीति पाठक ने कलाकारों का किया स्वागत, कलेक्टर समेत गणमान्यजन रहे मौजूद

साधना एक्सप्रेस सीधी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के तत्वावधान में गोपालदास मंदिर आश्रम स्थित राम मंदिर में भव्य भजन संध्या एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सीधी विधायक रीति पाठक एवं जिला कलेक्टर सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु, जनप्रतिनिधि, कला एवं संस्कृति प्रेमी मौजूद रहे। देर रात तक चले भजन कार्यक्रम में श्रद्धालु भक्तिरस में सराबोर नजर आए।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों एवं कलाकारों के स्वागत के साथ हुआ। विधायक रीति पाठक ने भजन संध्या में प्रस्तुति देने वाले कलाकारों का माल्यार्पण कर स्वागत एवं सम्मान किया। इस दौरान रोशनी प्रसाद मिश्र एवं कार्यक्रम संयोजक विभु आदर्श मिश्र तथा हिमांशु उरमलिया ने पुष्पगुच्छ भेंट कर विधायक का आत्मीय स्वागत किया। अतिथियों एवं कलाकारों ने मंदिर पहुंचकर भगवान श्रीराम एवं श्रीकृष्ण के दर्शन कर विधिवत पूजा-अर्चना की और मंदिर के पुजारी से आशीर्वाद प्राप्त किया।

भजन संध्या में गायक आदर्श मिश्र एवं गायिका मनीषा दुबे ने अपनी सुमधुर प्रस्तुतियों से वातावरण को कृष्णमय कर दिया। कलाकारों ने भक्ति गीतों एवं भगवान श्रीकृष्ण के भजनों की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं, जिन पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूमते नजर आए।

संगीत संगत में तबला वादक हिमांशु उरमलिया, परकशन पर विकास पाण्डेय एवं कीबोर्ड पर सुमित मौर्य ने शानदार संगत प्रदान की। हिमांशु उरमलिया ने तबले पर अपनी विशेष प्रस्तुति से भी श्रोताओं की खूब वाहवाही बटोरी। कार्यक्रम का मंच संचालन रोशनी प्रसाद मिश्र ने किया, जबकि कार्यक्रम संयोजक विभु आदर्श मिश्र रहे। मंच संचालन के दौरान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए भगवान श्रीकृष्ण के जीवन, कर्म और उनके संदेशों को रेखांकित किया गया।

कार्यक्रम में विश्वबंधुधर द्विवेदी, पंकज पाण्डेय, पुष्पराज सिंह, हीरालाल सिंह चंदेल सहित अनेक गणमान्य नागरिक, जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

छह साल तक अफसरों की फाइलों में अटका सम्मान, आखिर हाईकोर्ट के आदेश के बाद मिला हक

» शिक्षा विभाग की मनमानी भी नहीं रोक पाई प्रतिभावान शिक्षिका अजीता द्विवेदी का सम्मान, 5 सितंबर को राज्यपाल ने किया पुरस्कृत*

» 2020 में चयन के बाद पुरस्कार हुआ था होल्ड, न्यायालय ने माना पात्र; 2026 में 33 शिक्षकों के साथ दिया सम्मान

साधना एक्सप्रेस भोपाल

भोपाल। शिक्षक दिवस पर जब प्रदेश के प्रतिभावान शिक्षकों को उनके नवाचार और शिक्षा के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए सम्मानित किया गया, तब सीधी जिले की शिक्षिका अजीता द्विवेदी की कहानी इस समारोह के बीच शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली पर कई गंभीर सवाल खड़े करती है। यह सिर्फ एक पुरस्कार मिलने की कहानी नहीं है, बल्कि उस सम्मान के लिए छह साल तक चले संघर्ष की कहानी है, जो उन्हें उनके काम के आधार पर पहले ही मिल जाना चाहिए था। 5 सितंबर को राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार समारोह में राज्यपाल मंगूभाई पटेल एवं मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने 35 शिक्षकों को सम्मानित किया उनमें अजीता द्विवेदी का नाम भी शामिल है। खास बात यह है कि छह साल पहले जिस पुरस्कार के लिए उनका चयन हुआ था, वही सम्मान एक शिकायत के बाद रोक दिया गया था। मामला न्यायालय तक पहुंचा और हाईकोर्ट ने उन्हें पुरस्कार के लिए पात्र माना। इसके बावजूद विभागीय स्तर पर मामला वर्षों तक लटका रहा।

शिकायत हुई और रोक दिया गया सम्मान :

मामला वर्ष 2020 का है। सीधी जिले की प्रतिभावान शिक्षिका अजीता द्विवेदी का चयन राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए हुआ था। लोक शिक्षण संचालनालय की राज्य स्तरीय सूची में उनका नाम शामिल था। इसी दौरान सीधी के तत्कालीन विधायक केदारनाथ शुक्ला के रिश्तेदार शिक्षक सतीश कुमार पांडे की ओर से उनके चयन को लेकर शिकायत की गई।

शिकायत के बाद लोक शिक्षण संचालनालय ने उनका पुरस्कार होल्ड कर दिया और जिला शिक्षा अधिकारी, सीधी से चयन के संबंध में जवाब मांगा। हैरानी की बात यह रही कि जिला शिक्षा अधिकारी ने विभाग को भेजे जवाब में अजीता द्विवेदी के चयन को सही बताया।

यानी जिले से विभाग को यह स्पष्ट कर दिया गया कि चयन में कोई गलत बात नहीं है। फिर सवाल यह है कि जब विभागीय जांच में चयन सही पाया गया तो पुरस्कार आखिर क्यों अटका रहा?

न्यायालय ने माना पात्र, फिर भी वर्षों तक इंतजार :

जब मामला लंबे समय तक लंबित रहा तो शिक्षिका अजीता द्विवेदी को अपने अधिकार के लिए न्यायालय का दरवाजा खटखटाना पड़ा। हाईकोर्ट में याचिका दायर हुई। सुनवाई के बाद न्यायालय ने उन्हें पुरस्कार के लिए पात्र माना।यहीं से शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली पर सबसे बड़ा सवाल खड़ा होता है। जब न्यायालय ने पात्रता पर मुहर लगा दी तो विभाग को सम्मान देने में आखिर किस बात की हिचक थी?

एक शिक्षिका, जिसने बच्चों की शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए अपने स्तर पर नवाचार किए, उसे अपने ही विभाग से मिलने वाले सम्मान के लिए वर्षों तक दफ्तरों और अधिकारियों के चक्कर लगाने पड़े। जिस पुरस्कार को शिक्षक के काम की पहचान बनना था, वह उसके लिए संघर्ष और इंतजार का कारण बन गया।

आदेश के बाद भी फाइल क्यों नहीं चली? :

हाईकोर्ट के निर्णय के बाद भी यदि किसी शिक्षक को अपने सम्मान के लिए वर्षों तक इंतजार करना पड़े तो यह केवल प्रशासनिक देरी नहीं, बल्कि व्यवस्था की संवेदनशीलता पर सवाल है। शिक्षा विभाग के अफसरों के पास नियम हैं, जांच की व्यवस्था है और निर्णय लेने की जिम्मेदारी भी। लेकिन इस मामले में सवाल यह है कि एक बार न्यायालय का निर्णय आने के बाद भी संबंधित शिक्षिका को उनका सम्मान पाने के लिए इतनी लंबी लड़ाई क्यों लड़नी पड़ी? क्या किसी अधिकारी की नाराजगी, विभागीय जिद या फाइलों की लालफीताशाही न्यायालय के आदेश से बड़ी हो सकती है? शिक्षिका अजीता द्विवेदी का संघर्ष बताता है कि कभी-कभी शिक्षक को बच्चों को पढ़ाने से ज्यादा मुश्किल अपने अधिकार के लिए विभागीय व्यवस्था से लड़ना पड़ता है।

नवाचारों के लिए जानी जाती हैं अजीता :

शिक्षिका अजीता द्विवेदी की पहचान सिर्फ एक पुरस्कार पाने वाली शिक्षिका के रूप में नहीं है। वे बच्चों को पढ़ाई से जोड़ने के लिए स्थानीय और आसानी से उपलब्ध सामग्री का इस्तेमाल करते हुए कई नवाचार करती रही हैं। उन्होंने नीम के फूल, पिस्ता के छिलके जैसी सामान्य वस्तुओं से रंगोली बनाकर बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा दिया। बच्चों को नाम लिखना, अक्षर ज्ञान और गिनती सिखाने के लिए भी अलग-अलग गतिविधियों का सहारा लिया। यहां तक कि माचिस की तीलियों, कंकड़ और पत्थरों जैसी साधारण चीजों को भी उन्होंने बच्चों की पढ़ाई का माध्यम बनाया। इन प्रयोगों का उद्देश्य बच्चों में पढ़ाई के प्रति रुचि पैदा करना रहा। ऐसे नवाचार खासकर उन बच्चों के लिए उपयोगी हैं, जिनके लिए पारंपरिक तरीके से पढ़ाई करना आसान नहीं होता।

पुरस्कार से ज्यादा बड़ी है संघर्ष की जीत :

इस बार 5 सितंबर को जब शिक्षिका अजीता द्विवेदी ने राज्यपाल और मुख्यमंत्री के हाथों सम्मान लिया, तो मंच पर मिलने वाला पुरस्कार केवल एक प्रशस्ति-पत्र या सम्मान नहीं था। उसके पीछे छह साल का संघर्ष, विभागीय उपेक्षा और न्यायालय तक पहुंचने की पीड़ा भी थी। यह सवाल भी अपनी जगह कायम रहेगा कि यदि एक प्रतिभावान शिक्षिका का चयन 2020 में सही था, जिला शिक्षा अधिकारी ने भी चयन को सही बताया था और बाद में हाईकोर्ट ने भी उन्हें पात्र माना, तो उन्हें अपना सम्मान पाने के लिए 2026 तक इंतजार क्यों करना पड़ा?

शिक्षक दिवस पर सरकार और शिक्षा विभाग को ऐसे मामलों से सिर्फ पुरस्कार की सूची नहीं, बल्कि व्यवस्था की जवाबदेही भी देखनी चाहिए। क्योंकि किसी शिक्षक को सम्मान देना केवल मंच पर बुलाकर पुरस्कार देना नहीं है। उसके काम का समय पर सम्मान करना और उसके अधिकार के लिए उसे वर्षों तक सरकारी दफ्तरों में भटकने से बचाना भी व्यवस्था की जिम्मेदारी है। अजीता द्विवेदी आखिरकार सम्मानित होंगी, लेकिन उनकी छह साल की लड़ाई शिक्षा विभाग के सामने एक तीखा सवाल छोड़ जाती है—क्या न्याय पाने के बाद भी अपने ही अधिकार के लिए शिक्षक को छह साल तक इंतजार करना पड़ेगा?

जौहर : एक दर्दनाक इतिहास, जिसे समझने संवेदनशील दृष्टिकोण की जरूरत - डॉ आर एच लता

किसी भी ऐतिहासिक घटना को आज के चश्मे से देखकर उस पर सरल शब्दों में 'कायरता' या 'डर' का ठप्पा लगा देना इतिहास के साथ न्याय नहीं है। विशेषकर जब बात राजपूत और भारतीय क्षत्राणी नारियों के जौहर जैसी अत्यंत संवेदनशील ऐतिहासिक परंपरा की हो।

अभिनेत्री स्वरा भास्कर द्वारा क्षत्राणियों के जौहर को कायरता और डर से जोड़कर देखना एक ऐसी ऐतिहासिक दृष्टि है, जिस पर गंभीर पुनर्विचार की आवश्यकता है। इतिहास से असहमति हर व्यक्ति का अधिकार है, लेकिन इतिहास की किसी घटना का मूल्यांकन करने से पहले उस दौर की सामाजिक, राजनीतिक और युद्धकालीन परिस्थितियों को भी समझना भी उतना ही आवश्यक है। मध्यकालीन युद्धों का स्वरूप आज के युद्धों से बिल्कुल अलग था। पराजित राज्य की स्त्रियों और बच्चों की सुरक्षा के लिए उस समय कोई आधुनिक कानूनी या तो संस्थागत व्यवस्था नहीं थी। युद्ध में विजय के बाद महिलाओं के अपहरण, दासता, जबरन विवाह और यौन हिंसा का खतरा वास्तविक था। ऐसी परिस्थितियों में कुछ राजपूत समाजों में जब यह स्पष्ट हो जाता था कि दुर्ग की रक्षा अब संभव नहीं है और शत्रु सेना भीतर प्रवेश करने वाली है, तब महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से अग्नि में प्रवेश करने की परंपरा को जौहर कहा गया। पुरुष योद्धा इसके बाद अंतिम युद्ध जिसे साका कहा जाता था, के लिए निकलते थे।

आज की दृष्टि से जौहर एक अत्यंत पीड़ादायक और त्रासद घटना है। किसी भी स्त्री की मृत्यु को महिमा मंडित करना उचित नहीं है। लेकिन इसे केवल 'कायरता' कह देना भी उतना ही अनुचित है। ऐसा करना उन परिस्थितियों, भयावह संकट और मानसिक संघर्ष को नजरअंदाज करना होगा, जिनके बीच ऐसे निर्णय लिए गए।

पद्मिनी से लेकर हजारों अनाम स्त्रियों तक मृत्यु का सामना ? - रानी पद्मिनी और चित्तौड़ के जौहर की कथा भारतीय लोकस्मृति का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। इतिहास में जौहर की घटनाओं के विवरण अलग-अलग स्रोतों में अलग रूप में मिलते हैं और लोककथाओं तथा ऐतिहासिक प्रमाणों के बीच अंतर करना भी आवश्यक है। लेकिन एक बात निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में ऐसी अनेक स्त्रियाँ थीं जिन्होंने मुस्लिम आक्रांताओं के कारण युद्ध और राजनीतिक संघर्ष की भयानक परिस्थितियों का सामना किया। उनकी कहानी को केवल रोमांटिक बनाने के बजाय हमें उससे यह सीखना चाहिए कि समाज को ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जिसमें किसी स्त्री को सम्मान और जीवन के बीच चुनाव ही न करना पड़े। इतिहास की उन स्त्रियों को समझने के लिए भावनात्मक नारों के बजाय संवेदनशील ऐतिहासिक दृष्टि की आवश्यकता है। उनकी पीड़ा को समझना भी जरूरी है और उनके साहस तथा मनोबल को स्वीकार करना भी। यदि कोई महिला अपनी मृत्यु को सामने देखकर भी भय के बजाय अपने निर्णय पर अडिग रहती है, तो उसके मनोबल को समझना आवश्यक है।

हम इतिहास के उन अध्यायों को स्वीकार कर सकते हैं या उनसे असहमत हो सकते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि आज के समाज में किसी महिला के सामने ऐसी परिस्थिति कभी नहीं आनी चाहिए। लेकिन उन महिलाओं को, जिन्होंने अपने समय की भयावह परिस्थितियों में ऐसा निर्णय लिया, केवल डरपोक या कायर कहना उनके ऐतिहासिक संदर्भ और मानसिक साहस दोनों को नजरअंदाज करना है।

इतिहास की घटनाओं को समझने का अर्थ उनका समर्थन करना नहीं होता। इतिहास का अध्ययन इसलिए किया जाता है ताकि हम यह समझ सकें कि उस समय लोगों ने किन परिस्थितियों में कौन से निर्णय लिए और उन निर्णयों के पीछे कौन से सामाजिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक कारण काम कर रहे थे।

क्षत्राणी की शक्ति केवल तलवार उठाने में नहीं थी : - उस समय क्षत्राणी की शक्ति केवल तलवार उठाने या युद्धभूमि में उतरने में नहीं थी। वह संकट में धैर्य, आत्मसम्मान, मानसिक दृढ़ता और निर्णय लेने की क्षमता में भी दिखाई देती थी। आज हमें उसी शक्ति की आधुनिक और सकारात्मक व्याख्या करने की आवश्यकता है, जहां स्त्री भय के आगे झुके नहीं, बल्कि शिक्षा, आत्मनिर्भरता, कानून और अपने अधिकारों की ताकत के साथ अपने जीवन का निर्णय स्वयं ले।

आज जौहर की आवश्यकता या समर्थन की बात करना न तो उचित है और न ही इसका उद्देश्य होना चाहिए।

आज की भारतीय नारी की शक्ति जीवन चुनने, शिक्षा पाने, आत्मनिर्भर बनने, अन्याय का प्रतिरोध करने और अपने अधिकारों के लिए खड़े होने में है।लेकिन आधुनिक नारीवाद का अर्थ यह भी नहीं होना चाहिए कि हम अपने इतिहास की महिलाओं के साहस का उपहास करें।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इतिहास की त्रासद घटनाओं से सीखें और ऐसा समाज बनाएं, जहां किसी भी महिला को अपने सम्मान और जीवन के बीच चुनाव करने की मजबूरी न हो।

स्वरा जी, इतिहास से असहमति आपका अधिकार है। जौहर जैसी प्रथा पर प्रश्न उठाना भी आपका अधिकार है। लेकिन क्या किसी ऐतिहासिक परिस्थिति में मृत्यु का सामना करने वाली हजारों स्त्रियों को बिना उनके समय, परिस्थितियों और मानसिक अवस्था को समझे 'कायर' कहना उचित है? यदि आज हम स्त्री की स्वतंत्रता और गरिमा की बात करते हैं, तो हमें इतिहास की स्त्रियों के प्रति भी वही संवेदनशीलता रखनी चाहिए।

इतिहास की स्त्रियों को आज की राजनीतिक या वैचारिक बहस का आसान निशाना नहीं बनाया जाना चाहिए ? उनके निर्णयों की आलोचना हो सकती है। जौहर जैसी परंपरा पर सवाल उठाए जा सकते हैं। लेकिन यह बहस तथ्यों, ऐतिहासिक संदर्भों और संवेदनशीलता के साथ होनी चाहिए।

जौहर को न तो अंधी श्रद्धा से महिमामंडित करने की आवश्यकता है और न ही अज्ञानतापूर्ण ढंग से उसका अपमान करने की। उसे इतिहास के एक दर्दनाक, जटिल और साहस से जुड़े अध्याय के रूप में समझने की आवश्यकता है। इतिहास हमें यह भी सिखाता है कि परिस्थितियां चाहे कितनी ही कठिन क्यों न हों, आने वाली पीढ़ियों का दायित्व है कि वे ऐसा समाज बनाएं जहां किसी स्त्री को कभी सम्मान और जीवन के बीच चुनाव करने की नौबत न आए।और शायद यही जौहर जैसे त्रासद इतिहास से मिलने वाली सबसे बड़ी सीख है। स्त्री के सम्मान की रक्षा केवल मृत्यु में नहीं, बल्कि उसे सुरक्षित, स्वतंत्र और गरिमापूर्ण जीवन देने में है।

(लेखिका भारतीय योगिनी संघ की राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं)

शिक्षा और प्रतिभाओं के प्रोत्साहन से ही समाज की नई पीढ़ी होगी मजबूत : गोविंद सिंह राजपूत

» जन्माष्टमी पर यादव समाज ने निकाली भव्य रैली, प्रतिभावान छात्र-छात्राओं एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों का किया सम्मान

साधना एक्सप्रेस भोपाल।

मध्यप्रदेश के खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मेहनत, लगन और शिक्षा ही सफलता का सबसे मजबूत आधार है। समाज के प्रतिभाशाली बच्चों को प्रोत्साहित करने से उनमें आगे बढ़ने का आत्मविश्वास पैदा होता है।

मंत्री श्री राजपूत सागर जिले के राहतगढ़ में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर यादव समाज द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। इस दौरान यादव समाज के लोगों ने मंत्री श्री राजपूत का आत्मीय स्वागत एवं सम्मान किया। यादव समाज द्वारा राहतगढ़ के प्रमुख मार्गों से भव्य रैली निकाली गई। रैली में बड़ी संख्या में समाज के लोग शामिल हुए। इसके पश्चात आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों के साथ प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि यादव समाज अपने बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है, यह पूरे समाज के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में शिक्षा ही वह माध्यम है, जिसके जरिए बच्चे अपने परिवार, समाज और देश का नाम रोशन कर सकते हैं। उन्होंने सभी समाजों से आह्वान किया कि वे अपने बच्चों को अधिक से अधिक शिक्षा से जोड़ें और उनकी प्रतिभा को आगे बढ़ाने के लिए हरसंभव सहयोग करें।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में सभी वर्गों के कल्याण के लिए कार्य : - मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा सरकार समाज के प्रत्येक वर्ग के विकास और कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। सरकार की प्राथमिकता है कि विकास का लाभ गांव, गरीब, किसान, युवा, महिला और समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव स्वयं शिक्षा, युवा शक्ति, रोजगार, किसान कल्याण और सामाजिक विकास को लेकर लगातार महत्वपूर्ण निर्णय ले रहे हैं। प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पात्र हितग्राहियों तक पहुंचाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है।

यादव समाज के गौरव और सम्मान की दिशा में निरंतर प्रयास - मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि यादव समाज का इतिहास गौरवशाली रहा है। भगवान श्रीकृष्ण ने कर्म, कर्तव्य, धर्म और लोककल्याण का संदेश पूरी दुनिया को दिया। समाज की नई पीढ़ी को भगवान श्रीकृष्ण के आदर्शों से प्रेरणा लेकर शिक्षा, संस्कार और राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार द्वारा समाज के सभी वर्गों को समान अवसर देने और उनके विकास के लिए योजनाएं संचालित की जा रही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में सामाजिक समरसता और सर्वांगीण विकास की दिशा में लगातार कार्य हो रहा है। सरकार का प्रयास है कि युवाओं को बेहतर शिक्षा और रोजगार के अवसर मिलें तथा किसान, महिला, गरीब और वंचित वर्ग आत्मनिर्भर बनें।

उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रतिभाओं का सम्मान : - यादव समाज द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में शिक्षा के साथ-साथ अपने-अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले समाज के लोगों को भी सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने वाली विभूतियों ने समाज के युवाओं के लिए प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठजनों ने कहा कि प्रतिभा सम्मान जैसे आयोजन बच्चों और युवाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। इससे समाज में शिक्षा और उत्कृष्ट कार्य करने की सकारात्मक प्रतिस्पर्धा भी बढ़ती है।

जन्माष्टमी पर दिखी समाज की एकजुटताः - राहतगढ़ में आयोजित जन्माष्टमी समारोह के दौरान यादव समाज की एकजुटता और उत्साह देखने को मिला। भव्य रैली के बाद आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे। भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाते हुए समाज ने शिक्षा, संस्कार और सामाजिक एकता का संदेश दिया।कार्यक्रम के अंत में मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने यादव समाज को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि समाज की असली ताकत उसकी युवा पीढ़ी है और जब युवा शिक्षा एवं संस्कार से जुड़ते हैं तो समाज और राष्ट्र दोनों मजबूत होते हैं।

रीवा में स्वास्थ्य व्यवस्था पर उठे बड़े सवाल, राज्यपाल और आयुक्त को भेजा गया ज्ञापन

कल्पना मिश्रा की मौत पर एफआईआर की मांग, सरकारी और निजी अस्पतालों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने की उठी आवाज

साधना एक्सप्रेस रीवा।

संजय गांधी स्मृति चिकित्सालय में प्रसूता कल्पना मिश्रा और नवजात शिशु की मौत के मामले ने अब जन आंदोलन का रूप लेना शुरू कर दिया है। स्वास्थ्य सेवाओं में कथित लापरवाही, अव्यवस्था और जवाबदेही की कमी को लेकर सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं नागरिकों ने मध्यप्रदेश के राज्यपाल और रीवा संभाग के आयुक्त को विस्तृत ज्ञापन सौंपकर कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

ज्ञापन में आरोप लगाया गया है कि संजय गांधी अस्पताल सहित जिले के कई सरकारी एवं निजी अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। प्रसूता कल्पना मिश्रा की मौत का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि घटना से पहले महिला का एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें वह अपनी जान को खतरा बताते हुए दिखाई दे रही थी। ऐसे में मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज किए जाने की मांग उठाई गई है।

ज्ञापन में अस्पतालों में एक्सपायरी दवाओं के उपयोग, लिफ्टों के लंबे समय तक खराब रहने, वेंटिलेटर की बैकअप व्यवस्था फेल होने, स्ट्रेचर और अन्य सेवाओं के नाम पर अवैध वसूली, 108 एम्बुलेंस सेवा में देरी तथा मरीजों और परिजनों के साथ दुर्व्यवहार जैसे मुद्दों को भी प्रमुखता से उठाया गया है।

ज्ञापन के माध्यम से मांग की गई है कि सरकारी डॉक्टरों की निजी प्रैक्टिस पर प्रभावी रोक लगाई जाए, सभी प्रकार की जांचों और उपचार शुल्क की दरें सार्वजनिक की जाएं तथा निजी अस्पतालों में परामर्श शुल्क और भर्ती शुल्क का नियमन किया जाए। इसके अलावा प्रत्येक आईसीयू में सीसीटीवी कैमरे लगाने, मरीजों को दी जाने वाली दवाओं की दैनिक जानकारी परिजनों को उपलब्ध कराने तथा अस्पतालों में दवाओं और चिकित्सा उपकरणों की नियमित जांच कराने की मांग भी रखी गई है।

ज्ञापन में यह भी कहा गया है कि स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए शासन स्तर पर ठोस कदम उठाए जाएं, ताकि भविष्य में किसी परिवार को अपने परिजन को खोने के बाद न्याय के लिए भटकना न पड़े। साथ ही कल्पना मिश्रा के परिजनों को आर्थिक सहायता और उचित मुआवजा दिए जाने की भी मांग की गई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, मिनाक्षी पांडेय द्वारा डीके ऑफसेट प्रिंटर्स 50/6 शिवाजी नगर, भोपाल म.प्र से मुद्रित एवं 111/44, शिवाजी नगर, भोपाल म.प्र से प्रकाशित।
संपादक मिनाक्षी पांडेय एवं स्थानीय संपादक मनीष पांडेय मो.न- 7566293490, प्रबंध संपादक आशीष नेमा मेल sadhnaexpress@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल म.प्र रहेगा।)| RNI NO. MPHIN/2022/84698